॥श्री हरिः॥

'परशुरामेश्वर दर्पण' के विगत अंक के प्रकाशन पर

अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मलीन स्वामी श्री माधवाश्रम जी महाराज
श्रीमद् जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर
बदरिकाश्रम (हिमालय) के द्वारा सम्प्रेषित
शुभाशीर्वाद यथारूप

"यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि श्री परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर समिति द्वारा इस पवित्र शिवपीठ की महिमा तथा संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये 'परशुरामेश्वर दर्पण' नाम से एक वार्षिक पत्रिका प्रकाशित की जा रही है।

यह पत्रिका जनमानस में शिव भक्ति के साथ ही सात्विक गुणों की वृद्धि करे, यही प्रभु चरणों में कामना है।"

अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मलीन स्वामी श्री माधवाश्रम
जी महाराज
श्रीमद्जगद्गुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर
बदरिकाश्रम (हिमालय)
(पंजीकृत)
7, शंकराचार्य मार्ग, दिल्ली

मुख्य संरक्षकः
परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर समिति
पुरा महादेव (बागपत)

परशुरामेश्वर महादेव मंदिर-एक झलक

मंदिर परिसर का विहंगम दृश्य

दिव्य शिवलिंग

नन्दी जी

परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर ग्राम पुरा, जनपद बागपत, उत्तर प्रदेश में स्थित भव्य और आलौकिक तीर्थस्थल है। इसे 'पुरा महादेव' मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर पूर्णतयः भगवान शिव को समर्पित है। मन्दिर की चारों दिशाओं के सड़क मार्ग से मन्दिर के प्रांगण में पहुँचने के लिए चार द्वार हैं जिनके नाम हैं, क्रमशः-

शंकराचार्य द्वार पूर्व दिशा में, श्रवण द्वार पश्चिम दिशा में,
गंगोत्री द्वार उत्तर दिशा में, तथा कृष्णबोध द्वार दक्षिण दिशा में।

सभी द्वार मंदिर प्रांगण तक पहुँचते हुए संयुक्त रूप से एक स्वास्तिक की आकृति बनाते हैं जो शिल्प कला का अनूठा उदाहरण है। मंदिर प्रांगण बहुत विशाल और व्यवस्थित है। सत्संग, ध्यान, पूजा-पाठ आदि के लिए विशाल कक्ष हैं।

मंदिर के गर्भ ग्रह में दिव्य शिवलिंग विराजमान है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस शिवलिंग की स्थापना स्वयं भगवान परशुराम जी ने की थी। मुख्य गर्भ ग्रह में ही गणेश जी, माता पार्वती, भगवान कार्तिकेय और धन के देवता कुबेर भी विराजमान हैं। मंदिर प्रांगण में भगवती राजराजेश्वरी दुर्गा देवी का भव्य और दर्शनीय मंदिर स्थापित है। श्रवण द्वार की ओर पवन पुत्र श्री हनुमान जी की प्राचीन मूर्ति भी स्थापित है। सत्संग भवन में अनेकों देवी-देवताओं के दर्शनीय विग्रह स्थापित किए हुए हैं। साथ-ही-साथ परमपूजनीय, अनंत श्री विभूषित, जगद्गुरु शंकराचार्य ब्रह्मलीन श्री कृष्णबोधाश्रम जी महाराज की विशालकाय प्रतिमा भी स्थापित है।

सभी श्रद्धालुओं के लिए मंदिर सर्दियों में प्रातः 4 बजे से रात्रि 8:00 बजे तक तथा गर्मियों में रात्रि 9:00 बजे तक दर्शनाथ खुला है। सांय 4:00 बजे से मंदिर के गर्भ ग्रह में शिवलिंग का सांयकालीन आरती दर्शन शृंगार किया जाता है। अतः भक्तगण केवल सांय 4:00 बजे तक ही भगवान आशुतोष का जलाभिषेक कर

सकते हैं। तत्पश्चात् शृंगार के उपरांत केवल दर्शन कर सकते हैं।

मंदिर शिखर ध्वज पूजन

'परशुरामेश्वर महादेव मंदिर' में वर्ष में दो बार-फाल्गुन तथा श्रावण शिवरात्रि मेले के समय, चतुर्दशी तिथि के प्रारंभ में, भगवान शिव की प्रसन्नता हेतु, शिखर ध्वज पूजन और आरोहन किया जाता है। यह पूजन मन्दिर समिति के पदाधिकारियों, सदस्यों और अन्य प्रतिष्ठित अधिकारियों, आमंत्रित प्रशासनिक अधिकारियों, मंदिर से जुड़े प्रतिष्ठित जनों तथा विद्वत मंडली के सानिध्य में विधिवत संपन्न किया जाता है।

परम्परानुसार पहले ध्वज पूजन और आरोहण किया जाता है उसके पश्चात ही फाल्गुन और श्रावण मास मेले के समय कावड़ का शिव-चतुर्दशी का जल कावड़िए तथा अन्य शिव भक्त भगवान शिव को अर्पण करते हैं।

धार्मिक और पौराणिक मान्यतों के अनुसार मंदिर के शिखर पर लगाए जाने वाला ध्वज मन्दिर और नगर की रक्षा करता है। ऐसा माना जाता है कि ध्वजा नवग्रह को धारण किए होती है, जो रक्षा कवच का काम करती है।

जब भी मंदिर के बाहर से गुजरें तो शिखर-ध्वज और कलश को जरूर प्रणाम करें। यह मान्यता भी है कि यदि किसी कारणवश मंदिर के अंदर नहीं जा पा रहे हैं तो बाहर से ही मंदिर के शिखर-ध्वज को प्रणाम करने और शीश झुकाने से भी उतना ही पुण्य मिलता है जितना मंदिर में प्रतिमा के दर्शन करने से मिलता है।

मंदिर का संचालन, देखरेख, विकास कार्य और मेलों आदि में संपूर्ण व्यवस्था परशुरामेश्वर महादेव मंदिर समिति (पंजीकृत) द्वारा की जाती है।

मंदिर के मुख्य पुजारी हैं-
पं॰ जयभगवान शर्मा (9997001120)
पं॰ मनोज शर्मा (9897526544)
पं॰ आशुतोष शर्मा (9997836400)

अनुरोध

परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर एक पवित्र तीर्थ स्थल है। सभी शिवभक्तों से अनुरोध है कि इस तीर्थस्थल की पवित्रता और गरिमा का ध्यान रखें। मंदिर प्रांगण में साफ-सफाई में अपना सहयोग दें। विशेषकर शिवलिंग पर पूजा, अर्चना और जलाभिषेक के बाद दोने, पत्तल, डब्बे, पोलीथीन आदि छोड़कर न जाएँ।

संरक्षक

मुख्य संरक्षक- प्रातः चिरस्मरणीय पूज्यपाद श्रीमद्‌जगद्‌गुरु शंकराचार्य ज्यातिष्पीठाधीश्‍वर अनन्तश्री विभूषित ब्रह्मलीन स्वामी श्री माधवाश्रम जी महाराज (बदरिकाश्रम) हिमालय (पूर्व संरक्षक)

वर्तमान मुख्य संरक्षक- श्री वशिष्ट ब्रह्मचारी जी, श्री शंकराचार्य ट्रस्ट प्रतिनिधि (बदरिकाश्रम) हिमालय

1. श्री बह्म सिंह गोयल प्रधान (भट्टे वाले) बड़ौत (बागपत) मो॰: 07520885665
2. श्री वी॰ के॰ अग्रवाल, होटल सिटी पार्क, पीतमपुरा, गाजियाबाद
3. श्री दिनेश कुमार गोयल, आर के जी इंजीनियरिंग कालेज, गाजियाबाद
4. श्री विनय कुराली, शान्ति इंजीनियररिंग, कालेज, कुराली (मेरठ)
5. श्री अनुरूप शर्मा, अर्वाचीन भारती भवन, विवेक विहार, दिल्ली
6. श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता (सुशील गुप्ता); 6, विद्यासागर राजनगर, पीतमपुरा, दिल्ली
7. श्री वेदप्रकाश पांचाल, विक्टर पब्लिक स्कूल, गौरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली
8. श्री सत्य नारायण जी (सोनीपत वाले)
9. श्री राजेन्द्र सिंह मलिक, पुरामहादेव (बागपत)
10. श्री किशन चन्द अग्रवाल, फरीदाबाद (हरियाणा)
11. श्री दिनेश मित्तल, विवेक विहार, दिल्ली
12. पं॰ दयानन्द शर्मा, ग्राम ईशापुर, नई दिल्ली
13. श्री प्रमोद कुमार गुप्ता, पूर्व चेयरमैन, अग्रवाल मण्डी, टटीरी (बागपत)
14. श्री अनिल मलिक, पूर्व चेयरमैन अमीनगर सराय, बागपत
15. श्री भगवदास सिंघल, भैसरू खुर्द, सांपला मण्डी, रोहतक (हरियाणा)
16. श्री जय प्रकाश शर्मा, कपड़े वाले, बडौदा
17. श्री रकम सिंह दरोगा जी, मोदीनगर

परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर समिति (पंजीकृत)

कार्यकारिणी

मुख्य संरक्षक- प्रातः चिर स्मरणीय पूज्यपाद श्रीमद् जगदगुरु शंकराचार्य ज्योतिष्पीठाधीश्वर अनन्त श्री विभूषित ब्रह्मलीन स्वामी माधवाश्रम जी महाराज (बदरिकाश्रम) हिमालय (पूर्व संरक्षक)

वर्तमान मुख्य संरक्षक- श्री वशिष्ट ब्रह्मचारी जी, श्री शंकराचार्य ट्रस्ट प्रतिनिधि (बदरिकाश्रम) हिमालय

संयोजक	-	श्री तिलकराम गुप्ता (उम्मेदगढ़ वाले) पूर्व वाइस चेयरमैन-चिकित्सा सहायता एवं जनकल्याण समिति; 6, विद्यासागर, राजनगर, पीतमपुरा, दिल्ली मो०: 9313615517, 8130892063
अध्यक्ष	-	श्री अरूण शर्मा अर्वाचीन इंटरनैशनल स्कूल, दिलशाद गार्डन, दिल्ली मो०: 09810204999
उपाध्यक्ष	-	श्री धर्मवीर मलिक, पुरामहादेव (बागपत) मो०: 8273007599
उपाध्यक्ष	-	श्री कृष्णपाल मलिक, पुरामहादेव (बागपत) मो०: 7300770984
सचिव	-	श्री सुरेन्द्र यादव, अधिवक्ता, बुढ़सैनी (बागपत) मो०: 9412473599
उपसचिव	-	श्री अनिल शर्मा, बी-43, विक्रम एंक्लेव, शालीमार गार्डन, साहिबाबाद; मो०: 9891544752
कोषाध्यक्ष	-	श्री संजीव शर्मा (नौजल वाले) अग्रवाल मण्डी, टटीरी (बागपत) मो०: 9319343691
सह-कोषाध्यक्ष	-	श्री मृदुल मित्तल, अग्रवाल मण्डी, टटीरी (बागपत) मो०: 9358341421
आडिटर	-	श्री टी० पी० शर्मा बी-185-186, नेहरू विहार, निकट वजीराबाद पुल, दिल्ली-54, मो०: 9212583700
आडिटर	-	श्री विजय तोमर, सी-323ए, छज्जुपुर, शाहदरा, दिल्ली-32 मो०: 9868642626

परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर समिति (पंजीकृत)
सदस्य कार्यकारिणी

1. श्री अशोक मित्रा (मेला मंत्री), कांती नगर, दिल्ली;
   मो॰: 8700290899
2. श्री ब्रह्मपाल मलिक, पुरा महादेव (बागपत) मो॰: 9557984304
3. श्री बिलम सिंह यादव, ग्राम डोलचा (बागपत) मो॰: 9760498620
4. श्री उमादत्त शर्मा, अग्रवाल मण्डी, टटीरी (बागपत)
   मो॰: 9350827480
5. श्री रामबीर मलिक, पुरा महादेव (बागपत) मो॰: 8755564900
6. श्री जितेन्द्र मलिक, पुरा महादेव (बागपत) मो॰: 9634770705
7. श्री बिजेन्द्र मलिक, पुरा महादेव (बागपत) मो॰: 7060382742
8. श्री अंकुर शर्मा, अग्रवाल मण्डी, टटीरी (बागपत) मो॰: 9690169495
9. श्री सी॰ के॰ शर्मा, ईस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, दिल्ली;
   मो॰: 9810465271
10. श्री अनिल शर्मा (कैलाशी), रामविहार, जौहरीपुर, दिल्ली;
    मो॰: 9810465271
11. श्री अशोक गुप्ता, शम्भू नगर, मेरठ; मो॰ : 9837090670
12. श्री प्रमोद शर्मा, (हिसावदा) दिलशाद गार्डन, दिल्ली; मो॰ : 9811483191
13. श्री जितेन्द्र सिंघल, खेकड़ा (बागपत) मो॰ : 9412100990
14. श्री राजुल गुप्ता, अग्रवाल मण्डी, टटीरी (बागपत) मो॰: 9760910306

विशेष आमंत्रित संदस्य

1. श्री विनोद कुमार गुप्ता, (खरखौदा वाले), दिल्ली
2. श्री राकेश कुमार गुप्ता, महावीर नगर, मेरठ
3. श्री ईश्वर दयाल अग्रवाल, अमीनगर सराय (बागपत)
4. श्री संजय गर्ग, अमीनगर सराय (बागपत)
5. श्री संजीव शर्मा, गंगा विहार, शाहदरा, दिल्ली
6. श्री जगमोहन गर्ग, त्रिनगर, दिल्ली
7. श्री मुकेश अग्रवाल, पीतमपुरा, दिल्ली
8. श्री राजीव सूद, आर्कीटैक्ट, फरीदाबाद (हरियाण)
9. श्री सतीश मित्तल, (बसौंदी वाले) हरियाणा
10. डा॰ रामकिशन शर्मा, बलबीर नगर, शाहदरा, दिल्ली
11. श्री अनिल कुमार गुप्ता, विश्राम नगर, त्रिनगर, दिल्ली
12. शशांक मलिक, अमीनगर सराय (बागपत)
13. श्री देशपाल मलिक, पुरा महादेव (बागपत)
14. विक्रम सिंह यादव, नंगला हाजीपुर
15. श्री सुभाष चन्द गुप्ता, मार्बल्स हाउस, शाहदरा, दिल्ली
16. श्री अनिल गर्ग, त्रिनगर, दिल्ली
17. श्री सुरेन्द्र मलिक, पुरा महादेव (बागपत)
18. श्री राजेन्द्र शर्मा, कान्ति नगर, दिल्ली
19. श्री मांगेराम, मऊकला (बागपत)
20. श्री मणिभूषण शर्मा, पुत्र श्री श्याम सुन्दर शर्मा, दिल्ली

ॐ नमः शिवाय **निवेदन** ॐ नमः शिवाय

निवेदन

सम्मानित शिव भक्तों एवं धर्म प्रेमियों,

परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर ग्राम पुरा महादेव जनपद बागपत उ०प्र० में स्थित सिद्धपीठ है। जैसा कि आप सभी परिचित ही हैं कि हमें बड़े सौभाग्य से सिद्धपीठ परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर में आशुतोष भगवान की आराधना करने का अवसर प्राप्त होता है। यह हमारे संचित कर्मों का ही फल है।

परशुरामेश्वर मन्दिर की मान्यता रामेश्वरम् एवं बारह ज्योतिर्लिंगों के समकक्ष मानी जाती है। जगद्‌गुरु शंकराचार्य स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी महाराज की तपोभूमि और उनके वर्णन के अनुसार यह अनुपम शक्ति सिद्धपीठ है। यह शिवलिंग भगवान परशुराम द्वारा स्थापित है। इस मन्दिर का उल्लेख महाशिवपुराण के उपलिंगो में स्पष्ट है।

यहाँ पर वर्ष में दो मेले फाल्गुन एवं श्रावण माह में शिवरात्रि पर लगते हैं। यहाँ पर कांवड़ चढ़ाने का बहुत महत्व है। लाखों काँवड़िये शिवरात्रि पर मुख्यतः हरिद्वार से कन्धे पर पतित पावनी भागीरथी के अमृत गंगाजल को कांवड़ में रखकर 160 कि०मी० की पैदल यात्रा कर भगवान आशुतोष को जल अर्पण करते हैं तथा मन वांछित फल प्राप्त करते हैं।

जैसा कि आप देख रहे हैं कि पुरा महादेव मन्दिर समिति निरन्तर प्रगति कर रही है और हर श्रद्धालु एवं कांवड़िये की मन्दिर तक पहुँचने पर पूरी सुविधा का ध्यान रखती है। समिति का यह प्रयास रहता है कि यहाँ आने वाले शिवभक्तों की यथा शक्ति सेवा की जाये। इसमें समिति के सभी पदाधिकारी एवं सदस्य, विशेष आमंत्रित सदस्य, प्रशासन एवं सभी श्रद्धावान लोग अपना अमूल्य समय निकाल कर तन, मन एवं धन से मन्दिर की सम्पूर्ण व्यवस्था में पूर्ण योगदान करते हैं।

मैं फिर भी सभी श्रद्धालु जन से आशा करता हूँ कि वे मन्दिर के विकास, निर्माण एवं मेंलों की व्यवस्था हेतु श्रद्धानुसार अपने इष्ट भगवान शंकर के निमित अपनी आय में से सहयोग अवश्य प्रदान करें तथा दिये गये दान की रसीद अवश्य प्राप्त कर लें। धन्यवाद।

चिड़ियां चोंच भर ले गई नदिया घटे न नीर।
दान दिये धन न घटे कह गये दास कबीर॥

हर हर महादेव
आपका स्नेहाकांक्षी
संजीव शर्मा
कोषाध्यक्ष
परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर समिति (पंजी०)
पुरा महादेव (बागपत)

परशुरामेश्वर दर्पण एक सद्प्रयास

"इस धरा पर, जो धरा है, जहाँ धरा है, सब धरा रह जायेगा,
क्या साथ लाया था, क्या साथ ले जायेगा।
हमेशा याद रखो-कफन में जेब नहीं होती है।
खा लिया-सो खो दिया, खिला दिया सो बो दिया।"

"परशुरामेश्वर दर्पण" पुरा महादेव मन्दिर समिति द्वारा प्रकाशित एक ऐसी पुस्तिका है जिसमें गंगाजल को काँवर में भरकर लाने वाले शिवभक्तों के लिए आवश्यक दिशा निर्देशों के साथ-साथ काँवरियों का मार्ग दर्शन भी है। समर्पण, भक्ति और श्रद्धा के साथ-साथ नियमानुसार काँवर को पवित्रता के वातावरण में रखने की विधियों का सुन्दर विवेचन है।

पुरा महादेव जिला बागपत का ही नहीं अपितु पश्चिमी उत्तर प्रदेश का एक पावन स्थल है। शिव भक्तों के लिए यह श्रद्धा का केन्द्र है। यह वह पावन स्थान है जिसके समीप ही शुक्रताल पर श्री शुकदेव जी ने भागवत शौनकादि ऋषियों को इस कथा के माध्यम से एक स्थान पर एकत्रित कर भक्ति-भावना से आराधना का महत्व बताया था।

ग्राम पुरा में परशुरामेश्वर महादेव का जो शिव का स्वरूप है उसके सम्बन्ध में पुस्तिका में विस्तार से बताने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त शिव महिमा के गान के लिए अनेक भक्ति पूर्ण श्लोक हैं। इस संक्षिप्त पुस्तिका के माध्यम से श्री गंगा तीर्थ हरिद्वार से पुरा महादेव तक की यात्रा को किलोमीटरं के द्वारा विभिन्न स्थलों की दूरी को भी दर्शाया गया है। इससे काँवर लाने वाले भक्त स्थान-स्थान पर रुक कर विश्राम आदि के बाद आगे चलने का कार्यक्रम बना सकते हैं। श्री गणपति स्तुति के साथ-साथ द्वादश ज्योतिर्लिंगों के ध्यान एवम् अन्य स्त्रोतों का संकलन पुस्तिका की एक विशिष्ट विशेषता बन गयी है। शिव के अवतार को तीन-तीन रूपों में भक्त गण स्वीकार करते हैं। इसका वर्णन भी शिव भक्तों के लिये एक प्रेरणादायक सामग्री है।

परशुरामेश्वर महादेव के मन्दिर में जाने से पूर्व शिव भक्तों को किन-किन नियमों का पालन करना चाहिए, इस तरह के निर्देश भी भक्तों का मार्ग दर्शन करते हैं। आधुनिक युग में जब भौतिकता ने सारे परिवेश को अपने अधीन कर लिया है शिव भक्त अपनी परम्परा का पूर्ण निर्वाह करें, यह इस मन्दिर की व्यवस्था करने वालों की अपेक्षा है। यह उचित भी है।

श्री गंगाजी से काँवर भरकर चलने से पूर्व सारी जानकारी पुस्तिका के माध्यम से उन शिवभक्तों को लाभकारी सिद्ध होगी जो पहली बार काँवर लेकर पद यात्रा पर है। जो अपने जीवन में कई वर्षो से कांवर लाने का क्रम बना चुके है उनके लिए नवीन सामग्री का समावेश इस बार पुस्तिका के अन्दर प्रकाशन समिति ने किया है। विश्वास है कि यह सब लाभकारी होगा।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

विनीत:
निरन्तर आपकी सेवा में,
सुरेन्द्र यादव, एडवोकेट
सचिव
परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर समिति (पंजी॰)
पुरा महादेव (बागपत)

"ओउम् गजाननं भूतगणादि सेवितं कपित्थ जम्बूफलचारू भक्षणम्।
उमासुतम् शोकविनाशकारकम् नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्।।"

।। ऊँ नमः शिवाय ।।

परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर तथा पावन भूमि का संक्षिप्त पौराणिक इतिहास

आज जहां परशुरामेश्वर मन्दिर (पुरा महादेव) स्थित है यहाँ काफी समय पहले कजरी वन था। इसी वन में जमदग्नि ऋषि अपनी पत्नी रेणुका सहित अपने आश्रम में रहते थे। रेणुका प्रतिदिन कच्चा घड़ा बनाकर उसमें कच्चा सूत बांधकर नदी से (जिसे पुराणों में पंचतीर्थी कहा गया है और हिन्डन (हरनन्दी) के नाम से विख्यात है) जल भर कर लाती और शिव को अर्पण करती थी। कच्चे घड़े के अवशेष आज भी रेणुका टिल्ले पर मिलते हैं।

एक बार राजा सहस्त्रबाहु शिकार खेलते हुए इधर आ गये। समय काफी हो चुका था। अतः रेणुका ने कामधेनु गाय की कृपा से राजा सहस्त्रबाहु का पूर्ण आदर सत्कार किया तथा राजा एवं उनके साथियों को राजसी व्यंजन खिलाये जिन्हे देखकर राजा को आश्चर्य हुआ कि इतने शीघ्र जंगल में इतना सुन्दर प्रबन्ध किस प्रकार किया गया। सहस्त्रबाहु की जिज्ञासा हुई और उनके आग्रह पर रेणुका ने बताया कि यह सब कामधेनु की कृपा से हुआ है। इतना सुनकर राजा को आश्चर्य हुआ और राजा ने ऋषि की पत्नी से गाय को अपने साथ ले जाने को कहा। ऋषि की पत्नी के मना करने पर सहस्त्रबाहु ने कामधेनु को बलपूर्वक अपने साथ ले जाने की योजना बनायी। परन्तु कामधेनु की अनिच्छा के सामने राजा एवं साथियों की एक न चली। राजा गुस्से में आकर रेणुका को ही बलपूर्वक हस्तिनापुर अपने महल ले गया और एक कक्ष मे बन्द कर दिया।

जब ऋषि आश्रम में पहुँचे तो उन्हे आश्रम खाली मिला। जब उन्हें सहस्त्रबाहु के कुकृत्य के विषय में जानकारी मिली तो उन्हें बड़ा क्रोध आया। उधर राजा की अनुपस्थिति में उसकी रानी ने रेणुका को मुक्त कर दिया क्योंकि रेणुका रानी की बड़ी बहन थी। रेणुका ने आकर सारा वृतान्त अपने ऋषि पति को कह सुनाया। परन्तु भाग्य की विडम्बना से ऋषि ने रेणुका को आश्रम छोड़ जाने को कहा कयोंकि वह एक रात्रि दूसरे पुरुष (राजा सहस्त्रबाहु) के यहाँ पर ठहरी थी। वह ऋषि की दृष्टि में अपवित्र हो गयी थी। रेणुका ने ऋषि से बार-बार प्रार्थना की कि वह आश्रम छोड़कर नहीं जायेगी। अगर उन्हें विश्वास नहीं तो अपने हाथों से उसे मार दें जिससे पति के हाथों मर कर वह मोक्ष को प्राप्त हो जाये।

पत्नी की इच्छा जानकर ऋषि ने अपने समस्त पुत्रों को बुलाकर बारी-बारी से अपनी माता का सिर धड़ से अलग करने को कहा लेकिन तीन पुत्रों ने इसे कुकृत्य मान कर मना कर

दिया। तब ऋषि ने तीनों पुत्रों को पत्थर में बदल जाने का शाप दिया। फिर उन्होंने चौथे पुत्र परशुराम को बुलाया और सारी बात बताई तथा उन्हे भी अपनी आज्ञा सुनाई। तब परशुराम ने कहा कि पितृ आज्ञा मेरा धर्म है यह कह कर उन्होंने अपनी माता का सिर धड़ से अलग कर दिया। बाद में उन्हें इसका घोर पश्चाताप हुआ।

पश्चातापवश परशुरामजी ने वहाँ से थोड़ी दूर पर जाकर घोर तपस्या करनी आरम्भ कर दी तथा वहां पर शिवलिंग की स्थापना की, जो आज 'परशुरामेश्वर महादेव' के नाम से विख्यात है। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर प्रभु शिव ने उन्हें दर्शन दिये और वरदान माँगने को कहा। भगवान परशुराम ने प्रभु शिव से अपनी माता के जीवन की माँग की। प्रभु ने प्रसन्न होकर एक फरसा दिया तथा कहा कि जब भी युद्ध के समय इसका प्रयोग करोगे विजयी होओगे। साथ ही उन्होंने उनकी माता के जीवित होने का वरदान दिया। शिव द्वारा फरसा मिलने के उपरान्त ही उनका नाम परशुराम हुआ। उससे पूर्व उनको राम के नाम से जाना जाता था।

एक दिन मन्दिर से थोड़ी दूर पर उन्हें 'बचाओ-बचाओ' की आवाज सुनाई दी और वे उसी दिशा में चल पड़े उन्होंने देखा कि एक युवती पेड़ की शाखा पर उल्टी लटकी हुई है। परशुराम जी ने उन्हें बचा लिया, तब उस स्त्री ने कहा कि वह उनसे ही शादी करेगी क्योंकि उन्होंने ही उसका जीवन बचाया है। परशुराम ने बार-बार मना किया परन्तु वह नही मानी। तब परशुराम ने कहा कि एक शर्त पर वह शादी करने को तैयार हैं। अगर शादी करनी ही है तो हम सिर्फ नाम मात्र की शादी करेंगे दुनिया को दिखाने के लिए; कोई सांसारिक कार्य नही करेंगे क्योंकि वे ब्रह्मचारी हैं। युवती ने शर्त मान ली और शादी कर ली। यह युवती सहस्त्रबाहु की बड़ी पुत्री गायत्री थी।

परशुराम जी वहीं पास के वन में ही एक कुटिया बनाकर गायत्री सहित रहने लगे। थोड़े दिनों बाद ही परशुराम जी ने अपने फरसे से सहस्त्रबाहु की सारी सेना को मार दिया। परन्तु सहस्त्रबाहु ने अमृत छिड़क कर सेना को जीवित कर दिया। इस प्रकार बीस दिनों तक युद्ध चलता रहा। एक दिन जब सहस्त्रबाहु के दूत अमृत लेने आये तो गायत्री नें उन्हें देख लिया और उसने अमृत लेने से दूत को रोका। दूत ने कहा कि अगर अमृत न ले जाया गया तो आपके पिता की सेना जीवित नही हो सकेगी। अमृत न पहुंचने के कारण अगले दिन सहस्त्रबाहु भी मारा गया।

क्षत्रियों द्वारा अनेक दुष्कर्मो के किये जाने के कारण जनसाधारण में त्राहि-त्राहि मची हुई थी। तब परशुराम जी ने उन समस्त दुष्कर्म करने वाले क्षत्रियों को दण्डित किया तथा इक्कीस बार पृथ्वी को कुकर्मी क्षत्रियों से मुक्त किया।

कालान्तर में मंदिर खंडहरों में बदल गया। काफी समय बाद एक दिन लण्डौरा की रानी राजा रामदयाल की धर्मपत्नी इधर घूमने आई तो उनका हाथी यहाँ आकर रुक गया। महावत की बड़ी कोशिश के बाद भी हाथी वहाँ से नहीं हिला तब रानी ने सैनिकों को वह

जगह खोदने का आदेश दिया। खोदने पर वहां पर शिवलिंग प्रकट हुआ तब रानी ने वहाँ मंदिर बनवाया जो आज 'परशुरामेश्वर महादेव मंदिर' के नाम से प्रसिद्ध है। इस मंदिर में आदि काल से एक ही परिवार द्वारा अवैतनिक रूप से पूजा अर्चना की जा रही है तथा वर्तमान में पं॰ जयभगवान शर्मा, पं॰ मनोज कुमार शर्मा तथा पं॰ आशुतोष शर्मा पूजा अर्चना कर रहे हैं।

पुरा महादेव से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर महर्षि वाल्मीकि आश्रम है। उसी के पास में सर्वोदय संस्कृत आश्रम, बालैनी (बागपत), सम्पूर्णानन्द वि॰वि॰ से मान्यता प्राप्त, उच्चतर माध्यमिक तक की कक्षाओं का शिक्षण कार्य सुचारू रूप से सम्पादित कर रहा है। जिसकी स्थानपना श्री रामसिंह शान्त जी ने की और तभी से यह संस्था संचालित है। सांस्कृतिक चेतना के प्रसारण, उपेक्षित संस्कृत भाषा के उन्नयन तथा परम्पराओं की अक्षम्य धारा के प्रवाहन की प्रबलता प्रदान करने के लिये यह संस्था निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है। इस आश्रम में आवासीय व्यवस्था तथा निःशुल्क भोजन की व्यवस्था सुचारू रूप से की जाती है। महर्षि बाल्मीकि जी ने इस आश्रम में तपस्या की थी। यह उनकी तपोभूमि है। भगवान राम ने वन से अयोध्या आने के पश्चात (जन श्रुतियों के आधार पर) सीताजी को पुनः वनवास भेज दिया उस समय महर्षि बाल्मीकि जी की तपोभूमि पर सीतामढ़ी निर्मित की गयी जिसमें सीता जी ने निवास किया और लव एवम् कुश का जन्म भी इसी स्थान पर हुआ। उसी समय में यहाँ संस्कृत का एक बहुत बड़ा विद्यापीठ था जिसमें देश-विदेश के लोग शिक्षा अर्जित करने के लिए आते थे। लव-कुश ने भी महर्षि बाल्मीकि जी से धनुर्विधा का ज्ञान अर्जित किया। जिसका परिचय उन्होंने रामचन्द्र जी के अश्वमेघ यज्ञ का घोड़ा पकड़ने के पश्चात श्री लक्ष्मण जी से घोर युद्ध करके दिया।

यह क्षेत्र जमदग्नि ऋषि एंव बाल्मीकि की तपोभूमि एंव रेणुका एंव सीता माता की विषाद करूणास्थली है। परशुराम और लव-कुश की क्रीड़ा स्थली एवं कर्मस्थली है। यहाँ की रज अत्यन्त पावन एवं पवित्र है। इसके दर्शन मात्र से व्यक्ति धन्य एवं आत्म विभोर हो जाता है। यहां हरनन्दी नदी जिसको पंचतीर्थी के नाम से भी जाना जाता है अपनी दिव्य छटा का दिग्दर्शन करा रही है। घोर प्रदूषण और लम्बे समय के कठिन पक्षघातों ने इस तपोभूमि की सुन्दरता पर घोर कुठाराघात किया है। तथापि भारतीय सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक सुधारकों के अदम्य प्रयासों से यह तपोभूमि अपने धर्मिक स्वरूप को संजाए हुये है।

यहां पर जगद्गुरू शंकराचार्य श्री स्वामी कृष्ण बोधाश्रम जी महाराज ने तपस्या की और उन्हीं की प्रेरणा से पुरा महादेव मन्दिर समिति गठित की गयी जो आज भी 'परशुरामेश्वर महादेव मंदिर समिति' के नाम से कार्य कर रही है। आज से लगभग 12 वर्ष पूर्व ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरू शंकराचार्य ब्रह्मलीन स्वामी श्री माधवाश्रम जी महाराज (बद्रिकाश्रम हिमालय) जोशीमठ ने इसका नाम परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर रखा था।

वर्तमान में जो समिति मंदिर में कार्यरत है उसके द्वारा मंदिर का जीर्णोद्धार कराया जा रहा है। जिसमें दान दाताओं, धर्मप्रेमी बन्धुओं का निश्रतर सहयोग प्राप्त हो रहा है। मन्दिर के जीर्णोद्धार एवं नव निर्माण से इस पूरे क्षेत्र की छटा एवं भगवान शिव के सिद्ध पीठ होने के कारण उतरोत्तर काँवड लाकर जल चढ़ाने वालों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है। यहां पर गत वर्ष लगभग 16 लाख काँवड़ आशुतोष भगवान को अर्पित की गयी थीं।

पश्चिमी उ॰प्र॰ में पुरा महादेव जनपद बागपत में स्थापित आशुतोष भगवान शिव का यह मंदिर अपने आप में सिद्ध पीठ होने के कारण एक परम दर्शनीय स्थल है। यह स्थान मेरठ बागपत रोड पर मेरठ से 25 किमी॰ तथा बागपत से 20 किमी॰ बालैनी ग्राम से 3 किमी॰ उत्तर की ओर हिन्डन नदी के किनारे पर पुरा ग्राम में स्थित है।

परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर समिति आपके सुझाव तथा सहयोग की अपेक्षा करती है।

यह तपोभूमि है ऋषियों की, कर्म भूमि है, लव कुश, की॥
यहां की रज, कण पावन अनुपम, छटा मनोहर शिवजी की॥
पाप सभी के कट जाते हैं, दर्शन शिव के पाने से।
भक्ति, ज्ञान वैराग्य पाओगे, सिद्ध पीठ पर आने से॥

॥ ऊँ नमः शिवाय॥

सुरेन्द्र यादव, अधिवक्ता, सचिव
परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर समिति. (पंजी॰)
पुरा महादेव (बागपत)
मो॰ 9412473599

॥ गौरव गाथा ॥

'आचार्यवान् पुरुषोवेदः'

"परम्पज्य जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी महाराज"

जीवन की सार्थकता

"यदि आपने अपना कोई उद्देश्य निर्धारित नहीं किया है, तो जीवन निरर्थक है। उद्देश्य की पूर्ति के लिए जीवन खपा देने वाले को जो असीम सुख मिलता है, वह भौतिक सम्पत्ति जुटा लेने में नहीं मिलता।"

-स्वामी कृष्णबोधााश्रम जी महाराज

स्वामी जी प्रद्त मूल मंत्र

॥श्री राम जय राम जय जय राम॥

परशुरामेश्वर महादेव मंदिर अनेक महापुरुषों की तपस्थली रहा है। परम्पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य श्री स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी महाराज ने भी अपने कालखंड में यहाँ लम्बे समय तक पूजा, अर्चना और तपस्या की। ज्योतिष्मठ बदरिकाश्रम के शंकराचार्य के पद पर रहते हुए उन्होंने परशुरामेश्वर मंदिर प्रांगण में अपना अधिकांश समय तपस्या करते हुए व्यतीत किया। उन्हीं की प्रेरणा से सन् 1959 में 'पुरा महादेव मन्दिर समितिं' गठित की गई जो आज भी 'परशुरामेश्वर महादेव मंदिर समितिं के नाम से कार्य कर रही है।

ब्रह्मलीन जगद्गुरु श्री स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी महाराज स्थितप्रज्ञ और जीवनमुक्त महात्मा थे। उनका जन्म सम्वत् 1949 विक्रम के शुभ वर्ष में (ईसवी सन्1892) में भगवान आनंद कन्द श्री कृष्ण की लीलाभूमि, भाण्डीर वनप्रस्थ ग्राम छांहरी, तहसील माठ, जिला मथुरा के एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण प० टीकाराम जी के घर में माता श्री जावित्री देवी की कोख से हुआ। माता ने उनका नाम 'मदन मोहन' रखा।

बालक 'मदन मोहन' की प्रारम्भिक शिक्षा माठ स्कूल में हुई। उन्होंने मथुरा से हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। तदुपरान्त उन्होंने आगरा 'सेन्ट जॉन्स कालेज' में उच्च शिक्षा के लिए अध्ययन प्रारम्भ किया। वे सभी छोटी-बड़ी कक्षाओं में विलक्षण प्रतिभावान विद्यार्थी रहे। बाल्यवस्था में पाठशाला से लौटकर यमुना जी की रेती में लेटना उन्हें विशेष रुचिकर था। उस समय जब अल्पसंख्या में ही उच्च शिक्षा के लिए कॉलेज थे, तब बड़े-बड़े धनी लोगों के ही बच्चे कॉलेज में प्रवेश कर पाते थे। उसी समय में उन्होंने पिताश्री की प्रेरणा से, उच्च शिक्षा हेतु आगरा 'सेन्ट जान्स कॉलेज' मे प्रवेश प्राप्त किया। ऐसे समय में, जबकि अंग्रेजी शिक्षा एवम् सभ्यता का विद्यार्थियों पर पूर्ण प्रभाव व्याप्त था, तब भी वे प्राचीन सभ्यता के अनुकूल,

भारतीय वेशभूषा ही धारण करते रहे। कॉलेज में भी वे 'बगल बन्दी' पहन कर ही जाते थे। अनेक बार प्राध्यापकों एवम् सहपाठियों द्वारा समालोचना होने पर भी उन्होंने भारतीय वेशभूषा का त्याग नहीं किया।

आत्मा के ज्ञान को प्राप्त करने और अविद्या के पाप से बचने के लिए 20 वर्ष की अवस्था में ही श्री मदन मोहन घर से चले गए। उनका समय निरन्तर तत्व चिन्तन, ध्यान, जप, पाठ आदि में व्यतीत होने लगा। इसी बीच उन्हें लावंड़ (मेरठ) निवासी परम विद्वान और तपस्वी दण्डी स्वामी श्री 1008 स्वामी चैतन्याश्रम जी महाराज के दर्शन हुए। उन्होंने 'गुरुजी' से वेदान्त के प्रमुख ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन किया। वेद-वेदांगों का पूर्ण अध्ययन करने के उपरान्त, उन्होंने सम्वत् 1973 विक्रमी (ई॰ 1916) में श्री स्वामी चैतन्याश्रम जी महाराज से सन्यास दीक्षा ली और दण्ड ग्रहण किया। वस्तुतः वह अवसर सनातनी जगत के लिए बड़े सौभाग्य का अवसर था। उस समय स्वामी जी की आयु लगभग 24 वर्ष की थी।

स्वामी जी स्वभावतः बडे दयालु एवम् परोपकारी थे। वे प्रायः अपने पास के रुपये, पैसे आदि गरीबों में बांट दिया करते थे। अपने जूते तक उतार कर दूसरों को देकर स्वयं नंगे पांव घूमते थे। ठंड से सिकुडते किसी व्यक्ति को देखकर अपने शरीर के वस्त्र तक कई बार उसे देकर उन्होंने सहायता की। अपने साथ प्रायः एक कम्बल, एक बाल्टी तथा गीता की पुस्तक ही रखते थे।

श्री स्वामी कृष्णबोधाश्रम जी महाराज की वेदान्त निष्ठा सर्वथा अद्वितीय थी। साथ ही वेदान्त ग्रन्थों का अभ्यास भी अनुपम था। अनेकों ग्रन्थ उन्हें सर्वथा कण्ठस्थ-प्राय थे। पुराणों के अध्याय, स्तुतियाँ, कथा प्रसंग उनसे कहीं भी सुना जा सकता था। इसी कारण वे हिन्दु धर्म गन्थों एवम् आध्यात्मिक साहित्य के चलते फिरते पुस्तकालय तथा धार्मिक साहित्य के सजीव विश्वकोष माने जाते थे।

'शिखा-सुत्र धारण करो'; 'सन्ध्यावन्दन, बलि वैश्व देव करो'; 'अतिथि-सत्कार करो'; 'भारतीय वेश-भूषा धारण करो'; 'शास्त्रों का अध्ययन करो'; 'रामायण का पाठ करो'; 'मादक पदार्थों का सेवन न करो'; वे प्रायः इन्ही बातों पर अधिक जोर देते थे।

प्रयाग में अखिल भारतीय धर्म संघ के प्रथम अधिवेशन में उन्हें धर्म संघ का आजीवन अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। उसी समय से उन्होंने नगर-नगर, ग्राम-ग्राम जाकर 'धर्म संघ' की स्थापना की। उन्होंने लोगों में, जो अपने कल्याण-मात्र के लिए ही भजन-पूजन करते थे- यह उदार भावना भर दी कि,

"धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो।

प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो।"

और 'हर-हर महादेव' के जयघोष पूर्वक शुद्ध संकल्प से नित्य भजन पूजन करने की उदार भावना की प्रेरणा दी। वास्तव में, ऐसी सद्भावना से सुप्त सनातनी समाज में अद्भुत चेतना आई। स्वामी जी धर्म-प्रचार के साथ-साथ गौरक्षार्थ भी सतत् प्रयत्नशील रहे। गौ-रक्षा से जुड़े प्रायः सभी छोटे-बड़े आन्दोलनों का उन्होंने संचालन किया। 'गौ माता की जय हो, गौ हत्या

बन्द हो' का नारा जन-जन तक पहुँचाने का श्रेय भी स्वामी जी को ही जाता है।

ब्रह्मलीन स्वामी श्री कृष्णबोधाश्रम जी महाराज, धर्म पीठ ज्योतिर्मठ, बदरिकाश्राम, हिमायल के शंकराचार्य पद पर आसीन थे। पुराणों में इस ज्योतिर्मठ के विषय में कहा गया है कि यह गुप्त तीर्थ है, जो ज्योतिर्मठ के रूप में प्रगट हुआ है। यहाँ उस ब्रह्मज्योति का निवास है जो भक्ति-मुक्ति, लौकिक-पारलौकिक उभयविध सुख देने वाली है। आदि गुरु शंकराचार्य जी ने पाँच वर्ष यहीं रहकर ब्रह्मसूत्र इत्यादि पर भाष्यों की रचना की।

भगवान श्री आदि शंकराचार्य जी महाराज साक्षात भगवान शंकर जी के अवतार थे। जब वे ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही बदरिकाश्रम पहुँचे तब उन्होने देखा कि भगवान बदरीनाथ की प्रतिमा बौद्धों ने अलकनन्दा गंगाजी के अगम्य जल में फेक दी है। आचार्य जी ने अपने योगबल से नारद कुण्ड में प्रवेश करके प्रतिमा निकाली और बदरीनाथ मन्दिर में उनकी प्रतिष्ठा करके मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया। शीतकाल में वहाँ हिमपात के कारण रहना असम्भव था। अतः भगवान के भोग-राग की शीतकालीन व्यवस्था हेतु कार्यालय 'ज्योतिर्मठ' में स्थापित किया। यहाँ की दैवी शक्ति की प्रचुरता एवम् शान्त वातावरण से वे इतने प्रभावित हुए कि दिग्विजय के बाद, उन्होंने ज्योतिर्मठ को अपना उत्तराम्नाय मठ घोषित किया और अपने पट शिष्य त्रोटकाचार्य को ज्योतिष्पीठ के आचार्य पद पर अभिषिक्त किया।

ज्योतिर्मठ के प्रथम 19 आचार्य चिरंजीवी माने जाते हैं। इनकी नामावली इस प्रकार प्राप्त है-

"त्रोटको विजयः कृष्णः कुमारो गरूड़ः शुकः।
विन्ध्यो विशालो बकुलो वामनः सुन्दरोऽरूणः।।
श्री निवासः सुखानन्दों विद्यानन्दः शिवोगिरिः।
विद्याधरो गुणानन्दो नारायण उमापति।।
एते ज्योतिर्मठाधीशा आचार्याश्चिर जीविनः।
य एतान संस्मरेन्नित्यं योगसिद्धि स विन्दते।।"

उपरोक्त 19 आचार्यों के पश्चात् 40 अन्य सन्यासी ज्योतिर्मठ के आचार्य पद पर अभिषिक्त हुए। परन्तु चालीसवें आचार्य पूज्य स्वामी रामकृष्ण आश्रम जी के ब्रह्मीभूत होने के उपरान्त, उक्त पद 165 वर्षो तक रिक्त रहा। मन्दिर का प्रबंधन आदि पुजारी (रावल) के हाथों में आ गया और आचार्य पद का रिक्त रहना ही अभीष्ट हो गया। पूरे 165 वर्षो तक यही स्थिति चलती रही। 'मठ' धीरे-धीरे जीर्ण हो गया।

अंततः 165 वर्षो बाद 'भारत धर्म महामण्डल' के संस्थापक स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी के अथक प्रयासों से 'ज्योतिर्मठ' का पीठोद्धार संभव हुआ। तत्पश्चात् श्री ब्रह्मानन्द जी सरस्वती महाराज को ज्योतिष्पीठाधीश्वर के पद पर अभिषिक्त किया गया। परन्तु कालान्तर में उनके महानिर्वाण के पश्चात् आचार्य पद के लिए सभी की दृष्टि करपात्री जी महाराज पर थी, जो इस पद के लिए सर्वथा योग्य थे। परन्तु उन्होंने अपने विस्तृत धर्म कार्य में बाधा आती जानकर उक्त पद

ग्रहण करने में असमर्थता प्रकट की और स्वामी श्री कृष्णबोधाश्रम जी को इस पद के लिए उपयुक्त बताकर उनसे प्रार्थना करने के लिए कहा। पुनः 10 जून 1953 को विदिशा पीठाधीश्वर स्वामी श्री आत्मदेवाश्रम जी महाराज की अध्यक्षता में प्रमुख महात्माओं, विद्वानों एवम् सद्गृहस्थों की एक सभा हुई जिसमें यह निश्चय हुआ कि त्याग, वैराग्य एवम् धर्म की साक्षात मूर्ति पूज्य 1008 स्वामी श्री कृष्णबोधाश्रम जी महाराज को अभिषिक्त किया जाए। इस समाचार से भगवान शंकराचार्य के प्रायः सब ही अनुयायियों, दण्डी स्वामियों, विद्वानों एवम् धार्मिक जगत में हर्ष की लहर दौड़ गई। परन्तु महाराज जी ने इसके लिए मना कर दिया। अन्ततः विद्वानों के जोर देने पर और श्री स्वामी करपात्री जी महाराज के विशेष आग्रह पर उन्होंने ज्योतिष्पीठ का आचार्य होना स्वीकार कर लिया। तदुपरान्त काशी में ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी सम्वत् 2010 विक्रमी को उनका ज्योतिष्पीठाधीश्वर के रूप में अभिषेक हुआ।

स्वामी जी ने आचार्य पद पर आसीन रहते हुए भी कठोर तप किया, नियमित दिनचर्या का पालन किया,और सनातन-शाश्वत वैदिक धर्मरक्षा के लिए ही अपना जीवन समर्पित किया। वे वैदिक तत्वों के संरक्षक मात्र ही नहीं थे अपितु साक्षात धर्म की मूर्ति थे। स्वामी जी राम-नाम जपने पर विशेष बल देते थे। उन्होंने- 'श्री राम जय राम जय जय राम' का मूल मंत्र दिया जो भवसागर से तारने वाला मंत्र है। धर्म की रक्षा करते हुए और वैदिक तत्वों की स्मृति भारतीय समाज में जागृत करते हुए भाद्रपदशुक्ल 13, त्रयोदशी 10 सितम्बर 1973 को सांयकाल 7 बजे वे अपने 81 वर्षीय पार्थिव शरीर को त्याग कर बह्म में लीन हो गए।

तत्पश्चात सन् 1993 में शंकराचार्य के पद पर स्वामी माधवाश्रम जी महाराज को आसीन किया गया। वे भी परशुरामेश्वर महादेव मंदिर से जुड़े रहे और उनके सानिध्य मे अनेकों धार्मिक अनुष्ठान किए गए। स्वामी जी का जन्म उत्तराखण्ड के रूद्रप्रयाग जिले के अंतर्गत बेंजी ग्राम में हुआ था। स्वामी माधवाश्रम जी महाराज वेदों के प्रकांड ज्ञाता थे। उनकी विद्वता को देखते हुए धर्म संघ के तत्वाघान में, धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज के आशीर्वाद से जगन्नाथ पुरी पीठ के तत्कालीन शंकराचार्य स्वामी निरंजनदेव तीर्थ जी ने उन्हें ज्योतिष्पीठ का शंकराचार्य नियुक्त किया। उन्होंने ब्रह्मलीन होने तक इस परम्परा का बखूबी पालन किया। ब्रह्मलीन स्वामी माधवाश्रम जी महाराज परशुरामेश्वर महादेव मंदिर समिति में मुख्य संरक्षक के पद पर आसीन थे।

प्रमोद कुमार शर्मा (हिसावदा वाले)
दिलशाद गार्डन, दिल्ली
संत कृष्णाबोध शिक्षा सदन, मंडोली, दिल्ली
सदस्य कार्यकारिणी
परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर समिति (पंजी॰)

कल्याणकारी शिव और परशुरामेश्वर भगवान की उपासना

भगवान शिव जहाँ सृष्टि के संहार कर्ता के रूप में जाने जाते हैं वही उनका "शिवम्" अर्थात् कल्याणकारी रूप इस संसार को नित्य नवीन बनाने का संकल्प भी प्रस्तुत करता है। देव और दानवों के पारस्परिक संघर्ष का जो स्वरूप विष और अमृत के रूप में उत्पन्न हुआ था उसके मुख्य कारक "विष" को अपने कण्ठ में धारण कर सम्पूर्ण आपदाओं के अन्त का एक उदाहरण स्वयं शिव ने ही प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि भव सागर के भयानक वेग को पार करने के लिए मात्र शिव ही ऐसे महादेव हैं जिनकी कृपा से कल्याण की कामना की जा सकती है।

शिव ने जब-जब भी अपने विराट रूप को उद्घाटित किया है, संसार की आसुरी शक्ति का विनाश हुआ है। वृत्रासुर वध के लिए देवताओं ने शिव की उपासना के पश्चात् जब ब्रह्मा और विष्णु रूप में भगवान के दर्शन किये तो उन्हें दधीचि के रूप में वही कल्याणकारी मार्गदर्शक मिला और संसार में हाहाकार मचाने वाले वृत्रासुर के लिए अस्थि व्रज की निर्मित्त सम्भव हुई।

भगवान परशुराम, सहस्त्रबाहु, रावण अथवा स्वयं भगवान राम ने भी शिव को अपना आराध्य देव मानकर उनसे मनचाही कामना पूर्ति का आधार प्राप्त किया राम ने रामेश्वरम् में शिवलिंग की स्थापना करके लंकाधिपति रावण से युद्ध करने की शक्ति प्राप्त की थी। यह उस शिव का ही विराट रूप था कि रावण जैसे शिव भक्त को जीतने के लिए स्वयं राम को भी शिव उपासना का आश्रय लेना पड़ा।

एक ओर शिव ने "राम" को अपना आराध्य माना है तो दूसरी ओर भगवान राम ने स्वयं को "शिव" के सम्मुख एक अल्प शक्ति का अवतार स्वीकार किया है। शक्ति के लिए शिव का होना एक अनिवार्य सत्य है। बिना शक्ति के शिव की कल्पना करना ही जीवन की सच्चाई से दूर भागना है; यही कारण है कि शक्ति को माता का स्वरूप मानकर मानव की सभी इच्छाओं की पूर्ति सम्भव होती है। भवानी का रूप शिव की शक्ति के रूप में ही स्वीकार किया जाता है।

बहुत ही शीघ्र प्रसन्न होने वाले शिव की पूजा-अर्चना के लिए अनादिकाल से जो परम्परा चली आ रही है आज भी उसका महत्व कम नही है। देवताओं की नदी और 'सुरसरि' के नाम से जानी जाने वाली गंगा को जनकल्याण के लिए अपने शीश पर धारण करने वाले शिव ने जहां भगीरथ के रूप में मानव की भक्ति को स्वीकार

किया वहीं धरती पर अमृत की धारा से जीवन शक्ति का संचार भी किया।

इसी भगीरथ द्वारा धरती पर लायी गयी गंगा के जल से, युगों से आज तक, शिव का अभिषेक किया जाता है। हिमालय की गोद से धरती की ओर बढ़ने वाली गंगा के पावन जल को काँवर में भरकर पूरे विश्व में बने शिव मन्दिरों में चढ़ाने की परम्परा के पीछे भी शिव भक्तों ने भगवान शिव की उपासना को इसीलिए अपना जीवन लक्ष्य माना है।

उल्लेखनीय है कि परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर की मान्यता रामेश्वरम् और बारह ज्योतिर्लिंग के समकक्ष मानी जाती है। जगद्‌गुरू शंकराचार्य स्वामी कृष्ण बोधाश्रम जी महाराज की तपोभूमि और उनके वर्णन के अनुसार यह मंदिर अनुपम सिद्ध शक्ति पीठ है। परशुरामेश्वर महादेव मंदिर में भी इसी शिवोपासना की पद्धति का अनुसरण किया जा रहा है। लाखों शिव भक्तो द्वारा इस परशुरामेश्वर के तपस्थान पुरेश्वर में शिवलिंग पर गंगा जल का समर्पण कल्याण और सुखद परिणाम प्रदान करने वाला है। इसीलिए आज भी भगवान शिव का यह कल्याणकारी रूप मानव के मन में एक शक्ति का संचार करता है। विशेष रूप से शिव और शक्ति का रूप परशुरामेश्वर मन्दिर में हमें साक्षात देखने को मिलता है। लाखों के मन की कामना पूरी करने वाला परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर आज एक नवीन आस्था को लेकर निरन्तर अग्रसर है। आइये इस परशुरामेश्वर महादेव का आशीर्वाद लेकर अपना कल्याण स्वयं प्रशस्त करें।

अरूण शर्मा (अध्यक्ष)
परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर समिति (पंजी०)
पुरा महादेव (बागपत)
अर्वाचीन इंटरनैशनल स्कूल
दिलशाद गार्डन, दिल्ली
मो०: 9810204999

शिवलिंग-पूजन की महिमा

लोमश मुनि कहते है- जो विष्णु हैं उन्हें शिव जानना चाहिये और जो शिव हैं वे विष्णु ही हैं। पीठिका (आधार अथवा अर्धा) भगवान विष्णु का रूप है और उस पर स्थापित लिंग महेश्वर का स्वरूप है। अतः शिवलिंग का पूजन सबके लिए श्रेष्ठ है। ब्रह्मा जी निरन्तर मणिमय शिवलिंग का पूजन करते हैं। इन्द्र रत्नमय, चन्द्रमा मुक्तामय, सूर्य ताम्रमय, कुबेर चांदीमय, वरूण लाल रंग के शिवलिंग की निरन्तर आराधना करते हैं। पाताल में भी लोग शिवपूजक हैं। गन्धर्व और किन्नर भी शिवोपासना करते हैं। त्यों में प्रहलाद आदि कोई-कोई वैष्णव हैं। बलि, स्मुचि, हिरण्यकशिपु, वृषपर्वा, संहाद तथा बुद्धिमान शुक्राचार्य के और भी बहुत से शिष्य शिव की उपासना करके उच्चकोटि की सिद्धि को प्राप्त हुए हैं। रावण ने ऐसी तपस्या की थी जो सभी के लिए दु:सह थी। महादेव जी को तपस्या बहुत प्रिय हैं। प्रसन्न होकर रावण को ऐसे-ऐसे वरदान दिये, जो सबके लिए अत्यन्त दुर्लभ हैं। रावण ने भगवान सदाशिव से ज्ञान, विज्ञान, संग्राम में अजेयता तथा दस सिर प्राप्त किए और जगत मे दशानन के नाम से विख्यात हुआ। इस प्रकार रावण ने शिवलिंग की पूजा के प्रसाद से तीनों लोकों को वश में कर लिया।

जो नित्य (द्वादश ज्योर्तिर्लिंग में से किसी भी) लिंग स्वरूप भगवान शिव की पूजा करते हैं, वे सभी सम्पूर्ण दुखों को नाश करने वाले शिव को अवश्य प्राप्त कर लेते हैं। जो मन को अपने वश में करके भगवान शिव के ध्यान में तत्पर रहते हैं, उनका मायामय अज्ञान शीघ्र दूर हो जाता है, तथा माया का निवारण हो जाने से तीनों गुणों का लय हो जाता है इस प्रकार मनुष्य जब गुणातीत हो जाता है, तब वह मोक्ष का भागी होता है। जो मनुष्य शिव मन्दिर में झाडू लगाते हैं, वे निश्चय ही भगवान शिव के लोक में पहुंचकर सम्पूर्ण विश्व के लिए वन्दनीय हो जाते है। जो भगवान् शिव के लिए यहां अत्यन्त प्रकाशमान दर्पण अर्पण करते हैं, वे आगे चलकर शिवजी के सम्मुख उपस्थित रहने वाले पार्षद होंगे। जो लोग देवाधिदेव शूलपाणि, शंकर को चंवर भेंट करते हैं वे त्रिलोक में जहां-कहीं जन्म लेंगें उन पर चंवर डुलता रहेगा। जो भगवान की प्रसन्नता के लिए धूप निवेदन करते हैं, वे पिता और नाना दोनों कुलों का उद्धार करते हैं और जो दीप दान करते हैं, वह दोनों कुलों का उद्धार कर देते हैं और भविष्य में तेजस्वी होते हैं। जो मनुष्य हरि-हर के आगे

नैवेद्य निवेदन करते हैं, वे एक-एक (ग्रास) मे सम्पूर्ण यज्ञ का फल पाते हैं। जो लोग टूटे हुए शिव मन्दिर को पुनः बनवा देते हैं, वे निःसन्देह द्विगुण फल के भागी होते हैं। जो ईंट अथवा पत्थर से भगवान शिव तथा विष्णु के लिए नूतन मन्दिर निर्माण कराते हैं, वे तब तक स्वर्गलोक में आनन्द उठाते हैं, जब तक इस पृथ्वी पर उनकी वह कीर्ति स्थित रहती है।

तीनों लोकों में महादेव जी से बढकर दूसरा कोई देवता नहीं, इसलिए सब प्रकार के प्रत्यनों से भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए। जिनके मुख से, "नमः शिवाय," यह पंचाक्षर मंत्र सदा उच्चारित होता रहता है। वे मनुष्य भगवान शंकर के स्वरूप हैं। "शिव" यह दो अक्षरों का नाम महापातकों का भी नाश करने वाला है। पुराण पाठ, कथा, इतिहास और संगीत आदि नाना प्रकार के आयोजन भगवान शिव को प्रिय हैं। इनकी व्यवस्था करनी चाहिए। जो स्वधर्म का पालन करने वाले, महात्मा और शिव पूजा के विशेषज्ञ है, जिन्होने गुरू के मुख से शिव की दीक्षा ली है, जो निरन्तर शिव की पूजा में संलग्न रहते हैं, मन में दृढ़ विश्वास रखकर सम्पूर्ण विश्व को शिव के रूप में देखते है, उत्तम बुद्धि का आश्रय ले सदाचार का पालन करते है, वे ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र तथा कोई भी क्यों न हो, भगवान शिव के परम प्रिय होते हैं। भगवान शंकर ही इस सम्पूर्ण जगत के आधार हैं। अतः सब कुछ शिव स्वरूप है- यह बात विशेष रूप से जानने योग्य है। मनुष्य निष्काम हो या सकाम, सबको भगवान हरि-हर की आराधना करनी चाहिए। (संक्षिप्त स्कन्द पुराण-महेश्वर खण्ड)

संकलनकर्ता:

मृदुल मित्तल, सहकोषाध्यक्ष

अग्रवाल मण्डी, टटीरी (बागपत)

मो०: 9358341421

मानव जीवन के षोडश संस्कार

वेद-पुराणों तथा धर्मशास्त्रोंमें संस्कारों की आवश्यकता बतलायी गयी है। जैसे खान से सोना, हीरा आदि निकलने पर उसमें चमक-प्रकाश तथा सौन्दर्य के लिय उसे तपाकर चिकना करना आवश्यक होता है, उसी प्रकार मनुष्य में मानवीय शक्ति का आधान होने के लिये उसे सुसंस्कृत होना आवश्यक है अर्थात् उसका पूर्णतः विधिपूर्वक संस्कार सम्पन्न करना चाहिये।

पुराणों में विविध संस्कारों का उल्लेख है, परंतु उनमें मुख्य तथा आवश्यक षोडश संस्कार माने गये हैं। महर्षि व्यास द्वारा प्रतिपादित प्रमुख षोडश संस्कार इस प्रकार हैं-

1. गर्भाधान
2. पुंसवन
3. सीमन्तोन्नयन
4. जातकर्म
5. नामकरण
6. निष्क्रमण
7. अन्नप्राशन
8. वपन-क्रिया (चूडाकरण)
9. कर्णवेधन
10. उपनयन (व्रतादेश)
11. वेदारम्भ
12. केशान्त
13. वेदस्नान (समावर्तन)
14. विवाह
15. विवाहाग्नि-परिग्रह
16. त्रेताग्निसंग्रह।

1. गर्भाधान-संस्कार - विधिपूर्वक संस्कारसे युक्त गर्भाधान से अच्छी और सुयोग्य संतान उत्पन्न होती है। गर्भाधानके समय स्त्री-पुरुष जिस भाव से भावित होते हैं, उसका प्रभाव संतान में भी होता है। अतः शुभ मुहूर्त में शुभ मन्त्र से प्रार्थना करके गर्भाधान करें। इस विधान से शुभ भावापन्न मन का सम्पादन हो जाता है।

2. पुंसवन-संस्कार - पुत्र की प्राप्ति के लिये शास्त्रों में पुंसवन-संस्कार का विधान है। 'पुम्' नामक नरक से जो त्राण (रक्षा) करता है, उसे पुत्र कहा जाता है। इस वचन के आधार पर नरक से बचने के लिये मनुष्य पुत्र-प्राप्ति की कामना करते हैं। मनुष्य की इस अभिलाषा की पूर्ति के लिये ही शास्त्रों में पुंसवन-संस्कार का विधान मिलता है। जब गर्भ दो-तीन मास का होता है अथवा में गर्भ के चिह्न स्पष्ट हो जाते हैं, तभी पुंसन-संस्कार का विधान बताया गया है।

3. सीमन्तोन्नयन-संस्कार- गर्भ के छठे या आठवें मास में यह संस्कार किया जाता है। इस संस्कार का फल भी गर्भ की शुद्धि ही है। इस समय गर्भ शिक्षण-योग्य होता है। महाभक्त प्रह्लाद को देवर्षि नारदजी का उपदेश तथा अभिमन्यु को चक्रव्यूह-प्रवेश का उपदेश इसी समय में मिला था। अतः माता-पिता को चाहिये कि इन दिनों विशेष

सावधानी के साथ शास्त्र सम्मत व्यवहार रखें।

4. जातकर्म-संस्कार - इस संस्कार से गर्भस्त्राव-जन्य सारा दोष नष्ट हो जाता है। बालक का जन्म होते ही यह संस्कार करनेका विधान है।

बालक के पिता अथवा आचार्य को बालक के कान के पास उसके दीर्घायु के लिये इस मन्त्रका पाठ करना चाहिये-

अग्निरायुष्मान्त्स वनस्पतिभिरायुष्माँस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि॥

जिस प्रकार अग्निदेव वनस्पतियों द्वारा आयुष्यमान् हैं, उसी प्रकार उनके अनुग्रह से मैं तुम्हें दीर्घ आयु से युक्त करता हूँ।

5. नामकरण-संस्कार - इस संस्कार का फल आयु तथा तेज की वृद्धि एवं लौकिक व्यवहार की सिद्धि बताया गया है। जन्म से दस रात्रि के बाद ग्यारहवें दिन या कुलक्रमानुसार सौवें दिन या एक वर्ष बीत जाने के बाद नामकरण-संस्कार करने की विधि है।

6. निष्क्रमण-संस्कार - इस संस्कार का फल विद्वानों ने आयु की वृद्धि बताया है। 'निष्क्रमणादायुषो वृद्धिरप्युद्दिष्टा मनीषिभिः।' यह संस्कार बालक के चौथे या छठे मास में होता है। सूर्य तथा चन्द्रादि देवताओं का पूजन कर बालक को उनके दर्शन कराना इस संस्कारकी मुख्य प्रक्रिया है।

7. अन्नप्राशन-संस्कार- इस संस्कारके द्वारा माता के गर्भ में मलिन-भक्षण-जन्य जो दोष बालक में आ जाते हैं, उनका नाश हो जाता है। जब बालक 5-6 मास का होता है और दाँत निकलने लगते हैं, पाचनशक्ति प्रबल होने लगती है, तब यह संस्कार किया जाता है।

8. वपनक्रिया (चूडाकरण-संस्कार) - इसका फल बल, आयु तथा तेज की वृद्धि करना है। इसे प्रायः तीसरे, पाँचवें या सातवें वर्ष अथवा कुल परम्परा के अनुसार करने का विधान है। मस्तक के भीतर ऊपर को जहाँ पर बालों का भँवर होता है, वहाँ सम्पूर्ण नाड़ियों एवं संधियों का मेल हुआ है। उसे 'अधिपति' नामक मर्मस्थान कहा गया है, इस मर्मस्थान की सुरक्षा के लिये ऋषियों ने उस स्थान पर चोटी रखने का विधान किया है।

9. कर्णवेधन - पूर्ण पुरुषत्व एवं स्त्रीत्व की प्राप्ति के लिये यह संस्कार किया जाता है। सूर्य की किरणें कानों के छिद्रसे प्रविष्ट होकर बालक-बालिका को पवित्र करती हैं और तेज-सम्पन्न बनाती हैं। कर्णवेधन जन्मनक्षत्र में निषिद्ध माना गया है।

10. उपनयन (व्रतादेश)-संस्कार - इस संस्कार से द्विजत्वकी प्राप्ति होती है। विधिवत् यज्ञोपवीत धारण करना इस संस्कार का मुख्य अंग है। इस संस्कार के द्वारा अपने आत्यन्तिक कल्याण के लिये वेदाध्ययन तथा गायत्री-जप और श्रौत-स्मार्त आदि कर्म करने का अधिकार प्राप्त होता है।

11. वेदारम्भ-संस्कार - उपनयन हो जाने पर बालक का वेदाध्ययन में अधिकार प्राप्त हो जाता है। वेद विद्या के अध्ययन से सारे पापों का लोप होता है, और सारी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। गणेश और सरस्वती की पूजा करने के पश्चात् वेदारम्भ-आयु की वृद्धि होती है विद्यारम्भ में प्रविष्ट होने का विधान है।

12. केशान्त-संस्कार - वेदारम्भ-संस्कार में ब्रह्मचारी गुरुकुल में वेदों का स्वाध्याय तथा अध्ययन करता है। जब विद्याध्ययन पूर्ण हो जाता है, तब गुरुकुल में ही केशान्त-संस्कार सम्पन्न होता है। यह संस्कार केवल उत्तरायण में किया जाता है तथा प्राय: षोडश वर्ष में होता है।

13. वेदस्नान संस्कार (समावर्तन) - समावर्तन विद्याध्ययन का अन्तिम संस्कार है। विद्याध्ययन पूर्ण हो जाने के अनन्तर स्नातक ब्रह्मचारी अपने पूज्य गुरु की आज्ञा पाकर अपने घर में समावर्तित होता है- लौटता है। इसीलिये इसे समावर्तन-संस्कार कहा जाता है। गृहस्थ-जीवन में प्रवेश पाने का अधिकारी हो जाना समावर्तन-संस्कार का फल है।

14. विवाह-संस्कार - पुराणों के अनुसार ब्राह्म आदि उत्तम विवाहों से उत्पन्न पुत्र पितरों को तारनेवाला होता है। विवाह-संस्कार का भारतीय संस्कृति में अत्यधिक महत्त्व है। पाणिग्रहण-संस्कार देवता और अग्नि के साक्षित्व में करने का विधान है।

15. विवाहाग्नि-परिग्रह संस्कार - विवाह-संस्कार में लाजा-होम आदि क्रियाएँ जिस अग्नि में सम्पन्न की जाती हैं, वह 'आवसथ्य' नामक अग्नि कहलाती है। इसी को विवाहाग्नि भी कहा जाता है। उस अग्नि का आहरण तथा परिसमूहन आदि क्रियाएँ इस संस्कार में सम्पन्न होती हैं।

16. त्रेताग्निसंग्रह-संस्कार - स्मार्त या पाकयज्ञ-संस्था के सभी कर्म वैवाहिक अग्नि में तथा हविर्यज्ञ एवं सोमयज्ञ-संस्था के सभी श्रौत-कर्मानुष्ठानादि कर्म वैतानाग्नि (श्रोताग्नि-त्रेताग्नि)-में सम्पादित होते हैं।

(आचार्य सतीश भारद्वाज)

धर्म संघ दिल्ली

निवास - यमुना विहार, दिल्ली

मो॰ - 9811594384

कांवर चढ़ाने सम्बन्धी महत्वपूर्ण नियम

(1) कांवर शुद्ध सच्चे मन एवं लग्न से लानी चाहिये। इसमें किसी प्रकार की प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा नहीं होनी चाहिये।

(2) तामसिक वस्तुएँ, मादक पदार्थ (मांस, अण्डा, धूम्रपान इत्यादि) तथा अश्लील साहित्य एवं वार्तालाप को पूरी तरह त्याग दें। इनका प्रयोग निषिद्ध है।

(3) अगर सम्भव हो सके तो नंगे पैर यात्रा करें वरना केवल कपड़े का जूता प्रयोग करना चाहिए। चमड़े का प्रयोग निषेद्ध है।

(4) वस्त्रों में पीताम्बर या केसरी वस्त्र धारण करने चाहिएँ तथा सिर पर भी वस्त्र रखना चाहिए। सिर नंगा नहीं होना चाहिए।

(5) ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। जमीन अथवा तख्त पर सोना चाहिए।

(6) पूजा का सभी सामान साथ रखें। धूप, दीप, फल, फूल बेलपत्र, नेवैद्य इत्यादि से पूजन करना चाहिए तथा कोई भी जूठा, अपवित्र वस्त्र, पात्र इत्यादि सामान कांवर में नहीं रखना चाहिए।

(7) भोजन (अगर संभव हो सके) एक समय, केवल दोपहर में करें तथा भोजन सात्विक होना चाहिए।

(8) उपवास में भोजन त्याग दें तथा केवल फलाहार करें।

(9) हर-हर महादेव का निरंतर उच्चारण करें।

(10) शौच, मुखादि के पश्चात् स्नान अवश्य करें।

(11) किसी भी व्यक्ति विशेष एवं रिश्तेदार आदि का खाद्य पदार्थ बिना मूल्य चुकाये सेवन न करें। शुद्ध भण्डारों में भीक्षा कर सकते हैं। यह प्रसाद रूप में ग्रहण करें।

(12) रास्ते में अगर कहीं पर गूलर का वृक्ष मिले तो उसकी छाया से बचकर चलें अन्यथा आपकी तपस्या का प्रसाद गूलर के वृक्ष को मिल जाएगा। यदि मजबूरी हो तो "श्री नर-सिंहाय नमः" मंत्र का जप करना चाहिए।

(13) यात्रा के समय गृह प्रवेश वर्जित है।

(14) रास्ते में कांवर शुद्ध स्थान पर रखें। कांवर का स्थान अपने विश्राम स्थल से ऊँचा होना चाहिए।

(15) सुबह, दोपहर, सायं तीनों समय विश्राम करें, उसके उपरान्त पूजा करें, तब प्रस्थान करें। पूजा के पूर्व स्नान भी करना चाहिए।

(16) कांवर शुद्ध रूप से बनाकर, सजाकर जैसा भी संभव हो सके, प्रेम सहित जल कांवर में रखकर, गंगाजी पर स्नान करें तथा कांवर को भी स्नान कराना चाहिए। भगवान की आराधना के पश्चात् उत्तर मुख करके कांवर नीचे घुटनों के बल बैठकर सीधे कन्धे पर दोनों हाथों का स्पर्श सहित उठानी चाहिए तथा दायीं और को घूमना चाहिए। बायीं ओर को घूमना दोषपूर्ण है।

(17) संकल्प स्थल पर पहुंचने पर नदी स्नान जरूरी है। यही इस यात्रा का महात्मय है।

(18) कांवर सहित मन्दिर की अद्‌र्ध परिक्रमा करें।

(19) शिव रात्रि को रात्रि जागरण एवम् रात्रि पूजन करना प्रत्येक कांवरिया के लिए अत्यन्त जरूरी है। यह कार्य आप प्रथम जल चढ़ाने के उपरान्त अपने ग्राम के मन्दिर में भी कर सकते हैं।

(20) मंदिर पर यात्रा पूर्ण होने के उपलक्ष्य में प्रसाद वितरण कर मंदिर में दान अवश्य देना चाहिए।

(21) अपनी यात्रा पूरी करने के पश्चात घर में पहुँचकर श्रद्धा अनुसार बह्म भोज अथवा कन्या भोज अथवा गौ के लिए का भोजन का आयोजन कर तथा भगवान की स्तुति कर आनन्दित होवें।

(22) मदिरा व अन्य मद्य पदार्थो का सेवन न करें।

(23) चमड़े की बैल्ट, पर्स इत्यादि पहन कर मन्दिर में प्रवेश न करें।

प्रस्तुतिः
शिव कुमार शर्मा
त्रिनगर, दिल्ली।

यात्रा की दूरी-हरिद्वार से परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर तक

1.	हरिद्वार से ज्वालापुर	8 किमी॰
2.	ज्वालापुर से बहादराबाद	5 किमी॰
3.	बहादराबाद से मोड क्रेशर	9 किमी॰
4.	मोड क्रेशर से रुड़की	10 किमी॰
5.	रुड़की से मंगलौर	9 किमी॰
6.	मंगलौर से गुरूकुल नारसन	12 किमी॰
7.	गुरूकुल नारसन से पुरकाजी	5 किमी॰
8.	पुरकाजी से फलौदा	4 किमी॰
9.	फलौदा से बरला	4 किमी॰
10.	बरला से छपार	6 किमी॰
11.	छपार से सिसौना	7 किमी॰
12.	सिसौना से बझेड़ी	6 किमी॰
13.	बझेड़ी से मुजफ्फरनगर	3 किमी॰
14.	मुजफ्फरनगर से नागेश्वर महादेव मनिदर	14 किमी॰
15.	नागेश्वर मन्दिर से मंसूरपुर	2 किमी॰
16.	मंसूरपुर से नावला कोठी	3 किमी॰
17.	नावला कोठी से फुलत	5 किमी॰
18.	फुलत से बडसू	5 किमी॰
19.	बडसू से मुजाहिदपुर	6 किमी॰
20.	मुजाहिदपुर से रार्धना मन्दिर	5 किमी॰
21.	रार्धना मन्दिर से पाली	3 किमी॰
22.	पाली से कालन्द कोठी	5 किमी॰
23.	कालन्द कोठी से सरूरपुर	6 किमी॰
24.	सरूरपुर से करनावल	4 किमी॰
25.	करनावाल से मीरपुर पुल	4 किमी॰
26.	मीरपुर पुल से पुल थिरौठ	4 किमी॰
27.	पुल थिरौठ से कल्याणपुर	2 किमी॰
28.	कल्याणपुर से परशुरामेश्वर महादेव मनिदर	4 किमी॰

श्री रकम सिंह दरोगा जी,
मोदी नगर, गाजियाबाद

शिव आराधना

पूजन और जप को आरम्भ करने से पहले साधक को चाहिए कि संबंधित मंत्रों और शब्दों का सही उच्चारण और लय का अभ्यास कर लें। शिवाराधना और पूजन का क्रम यहाँ साधक की सुविधा के लिए क्रमानुसार दिया जा रहा है।

श्री गणेश का आवाहन- हाथ में अक्षत लेकर ध्यान करें-

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ् हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ् हवामहे निधिनां त्वा निधिपति ँ् हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ सिद्धिबुद्धि सहिताय गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

(हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा दें।)

पुनः अक्षत लेकर गणेश जी की दाहिनी ओर भगवती गौरी का आवाहन करें-

भगवती गौरी का आवाहन

ॐ अम्बे अम्बिकेऽ बालिके न मा नयति क श्चन।

ससस्त्य श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

ॐ गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

कार्तिकेय-पूजन

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यनत्समुद्रादुत वा पुरीषात्।

श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥

श्री कार्तिकेय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

कुबेर-पूजन

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व वियूय।

इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्ति यजन्ति॥

श्री कुबेराय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

नन्दीश्वर-पूजन

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्सवः॥

श्री नन्दी श्वर नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

वीरभद्र-पूजन

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाय देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः॥
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥
श्री वीरभद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

कीर्तिमुख-पूजन

ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा
गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाऽभिभुवे स्वाहाऽधिपतये स्वाहा
शूषाय स्वाहा स ँ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहां ज्योतिषे स्वाहा
मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतयते स्वाहा॥
श्री कीर्तिमुखाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

सर्प-पूजन

निम्न मंत्र से जलहरी में सर्प-पूजन करें-
ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः॥
श्री नागराजाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

शिव-पूजन

भगवान् शिव का ध्यान- ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।
ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यंविश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, ध्यानार्थे बिल्वपत्रं समर्पयामि।
(ध्यान करके शिवलिङ्गपर बिल्वपत्र चढ़ायें।)

आवाहन

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृतयोर्मुक्षीय मामृतात्॥
आगच्छ भवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव।
यावत् पूजां करिष्येऽहं तावत् त्वं संनिधौ भव॥
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। (पुष्प चढ़ायें।)

आसन

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
इंद हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, आसनार्थे बिल्वपत्रं
समर्पयामि। (आसन के लिए बिल्वपत्र चढ़ायें।)

पाद्य

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्।।
भगवते श्रीसाम्बसदा शिवपरिवार देवताभ्यो नमः, पादयोः
पाद्यं समर्पयामि। जल चढ़ायें।

अर्घ्यं

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तअर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाण भगवन् शम्भो प्रसन्नो वरदो भव।।
भगवते श्रीसाम्बसदा शिवपरिवार देवताभ्यो नमः,
हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि। (चन्दन, पुष्प, अक्षतयुक्त अर्घ्य समर्पण करें।)

आचमन

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, आचमनीयं
जलं समर्पयामि। (कर्पूर से सुवासित शीतल जल चढ़ायें।)

स्नान

मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, स्नानीयं
जलं समर्पयामि। स्नानान्ते आचमनीयं जलं च समर्पयामि।
(स्नानीय और आचमनीय जल चढ़ायें।)

दुग्धस्नान

कामधेनुसमुद्भूतां सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानाय गृह्यताम्।।

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, पयःस्नानं समर्पयामि, पयःस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(दूध से स्नान करायें, पुनः शुद्ध जल से स्नान करायें और आचमन के लिये जल चढ़ायें।)

दधिस्नान

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, दधिस्नानं समर्पयामि, दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामिं, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(दही से स्नान कराकर शुद्ध जलसे स्नान करायें तथा आचमन के लिये जल समर्पित करें।)

घृतस्नान

नवनीतसमुत्पन्न सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, घृतस्नानं समर्पयामि, घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(घृत से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान करायें और पुनः आचमन के लिये जल चढ़ायें।)

मधुस्नान

पुष्परेणुसमुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, मधुस्नानं समर्पयामि, मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

(मधु से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान करायें तथा आचमन के लिये जल समर्पित करें।)

शर्करास्नान

इक्षुसारसमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि शुद्धोदकस्नान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (शर्करा से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान करायें तथा आचमन के लिए जल चढ़ायें।)

पञ्चामृतस्नान

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयाामि, पञ्चामृतस्नान्ते शुद्धादकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (पञ्चामृतं से स्नान कराकर शुद्ध जल से स्नान करायें तथा आचमन के लिए जल चढ़ायें।)

गन्धोदकस्नान

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रितम्।
इदं गन्धोदकस्नानं कुंकुमाक्तं नु गृह्यताम्॥
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि, गन्धोदकस्नान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
(गन्धोदक से स्नान कराकर आचमन के लिए जल चढ़ायें।)

शुद्धोदकस्नान

शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्॥
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि, शुद्धोदकस्नान्ते आचमनीय जलं समर्पयामि।
(शुद्ध जल से स्नान करायें, तदनन्तर आचमनीय जल चढ़ायें।)

महाभिषेक स्नान

रौद्राध्यायके 'नमस्ते॰' इत्यादि निम्न षोडश मन्त्रों से महाभिषेक-स्नान करायें-

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः॥
या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳसीः पुरुषं जगत्॥
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमना असत्॥
अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहीꣳश्च सर्वाञ्जम्भयन्तसर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव॥
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैनꣳरुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳहेडईमहे॥
असौ योऽवसर्वति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नदार्य स दृष्टो मृडयाति नः॥
नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः॥
प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप॥
विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत।
अनेषन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः॥
या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयाऽस्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज॥
परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्॥
अवतत्य धनुष्ट्वꣳसहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव॥
नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने॥
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥
मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे॥

आचमन

भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः महाभिषेकस्नान्ते
आचमनीयं जलं समपयामि। (आचमन के लिए जल चढ़ायें।)

वस्त्र

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रं धृत्वा शान्तिं प्रयच्छ मे।।
भगवते श्रीसाम्बसदा शिवपरिवार देवाताभ्यो नमः, वस्त्रं समर्पयामि, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (वस्त्र चढ़ायें तथा आचमन के लिए जल चढ़ायें।)

यज्ञोपवीत

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
भगवते श्रीसाम्बसदा शिवपरिवार देवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
(यज्ञोपवीत समर्पित करें तथा आचमन के लिए जल चढ़ायें।)

उपवस्त्र

उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर।।
भगवते श्रीसाम्बसदा शिवपरिवार देवताभ्यो नमः, उपवस्त्रं सर्मपयामि, उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
(उपवस्त्र चढ़ायें तथा आचमन के लिए जल दें।)

चन्दन

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, गन्धानुलेपनं समर्पयामि। (चन्दन उपलेपित करें।)

भस्म

सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिसमप्रभम्।
सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, भस्म समर्पयामि (भस्म चढ़ायें)

अक्षत

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥
भगवते श्री साम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, अक्षतान्
समर्पयामि। (कुंकुमयुक्त अक्षत चढ़ायें।)

पुष्पमाला

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तितः।
मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, पुष्पमाला सपर्मयामि।
(पुष्प एवं पुष्पमाला चढ़ायें।)

बिल्वपत्र

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च
नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च॥
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि।
(बिल्वपत्र समर्पित करें।)

दुर्वाङ्कुर

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान मङ्गलप्रदान।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर॥
(भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः,
दूर्वाङ्कुरान समर्पयामि। (दूर्वाङ्कुर चढ़ायें।)

सुगन्धित द्रव्य

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।
(सुगन्धित द्रव्य चढ़ाये।)

एकादश-रुद्रपूजा-एकादश रुद्रों तथा एकादश शक्तियों के नाम मन्त्रों से भगवान् श्रीसाम्बसदाशिव पर गन्धाक्षत पुष्प तथा बिल्वपत्र चढ़ाये-

ॐ अघोराय नमः॥१॥ ॐ पशुपतये नमः॥२॥ ॐ शर्वाय नमः॥३॥
ॐ विरूपाक्षाय नमः॥४॥ ॐ विश्वरूपिणे नमः॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः॥६॥
ॐ कपर्दिने नमः॥७॥ ॐ भैरवाय नमः॥८॥ ॐ शूलपाणये नमः॥९॥
ॐ ईशानाय नमः॥१०॥ ॐ महेश्वराय नमः॥११॥

एकादश शक्तिपूजा

ॐ उमायै नमः॥१॥ ॐ शङ्करप्रियायै नमः॥२॥ ॐ पार्वत्यै नमः॥३॥
ॐ गौर्यै नमः॥४॥ ॐ काल्यै नमः॥५॥ ॐ कालिन्द्यै नमः॥६॥
ॐ कोटर्यै नमः॥७॥ ॐ विश्वधारिण्यै नमः॥८॥ ॐ ह्रां नमः॥९॥
ॐ ह्रीं नमः॥१०॥ ॐ गङ्गादेव्यै नमः॥११॥

नानापरिमलद्रव्य

दिव्यगन्धसमायुक्तं नानापरिमलान्वितम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शोभनम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदा शिवपरिवार देवताभ्यो नमः, नानापरिमलद्रव्याणि सपर्मयामि। (परिमलद्रव्य चढ़ायें।)

सिन्दूर

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, सिन्दूरं समर्पयामि। (सिन्दूर समर्पित करें।)

भगवान सदाशिव के आगे चौकोर जलका घेरा लगाकर उसमे नैवेद्यादि वस्तुओं को रखें, इसके बाद धूप-दीप निवेदन करें।

धूप

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि, (धूप आघ्रापित करें।)

दीप

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, दीपं दर्शयामि

नैवेद्य

नैवेद्य में बिल्वपत्र रखकर निम्नलिखित मन्त्र बोलकर भगवान को भोग लगायें।
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। 'ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा। 'नैवेद्यान्ते ध्यानम्, ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि, मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, उत्तरापोशनं मुखप्रक्षालनार्थं हस्तप्रक्षालनार्थं च जलं सपर्मयामि।

करोद्वर्तन

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि। (चन्दनका अनुलेपन करें।)

ऋतुफल

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, ऋतुफलानि निवेदयामि।
(ऋतुफल चढ़ायें।)

द्रव्य-दक्षिणा

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
भगवते श्रीसाम्बसदाशिवपरिवार देवताभ्यो नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य-दक्षिणा समर्पित करें।)

स्तुति

हाथमें फूल लेकर निम्न स्तुति-पाठ करें-

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥

(फूल भगवान पर चढ़ा दें।)

विशेष-पूजा

गन्ध अक्षत और पुष्प अथवा बिल्वपत्र आदिसे भगवान् शिवकी अङ्गपूजा, गणपूजा तथा अष्टमूर्तिपूजा करें-

अङ्गपूजा- ॐ ईशानाय नमः, पादौ पूजयामि। ॐ शङ्कराय नमः, जङ्घे पूजयामि। ॐ शिवाय नमः, जानुनी पूजयामि। ॐ शूलपाणये नमः, गुल्फौ पूजयामि। ॐ शम्भवे नमः, कटी पूजयामि।

ॐ स्वयम्भुवे नमः, गुह्यं पूजयामि। ॐ महादेवाय नमः, नाभिं पूजयामि।
ॐ विश्वकर्त्रे नमः, उदरं पूजयामि। ॐ सर्वतोमुखाय नमः, पार्श्वे पूजयामि।
ॐ स्थाणवे नमः, स्तनौ पूजयामि। ॐ नीलकण्ठाय नमः, कण्ठं पूजयामि।
ॐ शिवात्मने नमः, मुखं पूजयामि। ॐ त्रिनेत्राय नमः, नेत्रे पूजयामि।
ॐ नागभूषणाय नमः, शिरः पूजयामि। ॐ देवाधिदेवाय नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि।

गणपूजा

ॐ गणपतये नमः॥१॥ ॐ कार्तिकाय नमः॥२॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः॥३॥ ॐ कपर्दिने नमः॥४॥ ॐ भैरवाय नमः॥५॥ ॐ शूलपाणये नमः॥६॥ ॐ ईश्वराय नमः॥७॥ ॐ दण्डपाणये नमः॥८॥ ॐ नन्दिने नमः॥९॥ ॐ महाकालाय नमः॥१०॥

अष्टमूर्तिपूजा

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः॥१॥ ॐ भवाय जलमूर्तये नमः॥२॥ ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः॥३॥ ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः॥४॥ ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः॥५॥ ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः॥६॥ ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः॥७॥ ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः॥८॥

अष्टोत्तरशतशिवनामपूजा

अष्टोत्तरशतशिवनाम-पूजनसे पहले निम्न विनियोग करे-

विनियोग– ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाम मन्त्रस्य नारायण ऋषिसुष्टुप् छन्द श्री सदाशिवो देवता गौरीउमाशक्तिःश्री साम्वसदाशिव प्रीतये अष्टोत्तरशत नामभिः शिवपूजने विनियोगः

(एक आचमनी जल छोड़ें।)

ध्यान– हाथ जोड़कर भगवान् श्रीसाम्बसदाशिवका ध्यान करें–

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभङ्गम्॥
गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ध्यानके अनन्तर भगवान् शिव के, आगे लिखे, 108 नामों से शिवलिङ्ग पर बिल्वपत्र चढ़ायें अथवा पुष्प-अक्षत आदिसे शिवपूजन करें-

ॐ शिवाय नमः, ॐ शितिकण्ठाय नमः, ॐ महेश्वराय नमः, ॐ शिवप्रियाय नमः,
ॐ शम्भवे नमः, ॐ उग्राय नमः, ॐ पिनाकिने नमः, ॐ कपालिने नमः, ॐ शशिशेखराय नमः,
ॐ कामारये नमः, ॐ वामदेवाय नमः, ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः, ॐ विरूपाक्षाय नमः,
ॐ गंगाधराय नमः, ॐ कपर्द्दिने नमः, ॐ ललाटाक्षाय नमः, ॐ नीललोहिताय नमः,
ॐ कालकालाय नमः, ॐ शंकराय नमः, ॐ कृपानिधये नमः, ॐ शूलपाणये नमः,
ॐ भीमाय नमः, ॐ खड्वांगिने नमः, ॐ परशुहस्ताय नमः, ॐ विष्णुबल्लभाय नमः,
ॐ मृगपाणये नमः, ॐ शिपिविष्टाय नमः, ॐ जटाधराय नमः, ॐ अम्बिकानाथाय नमः,
ॐ कैलाशवासिने नमः, ॐ श्रीकण्ठायनमः, ॐ कवचिने नमः, ॐ भक्तवत्सलायनमः,
ॐ कठोराय नमः, ॐ भवाय नमः, ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः, ॐ शर्वाय नमः, ॐ वृषांकाय नमः,
ॐ त्रिलोकीशाय नमः, ॐ वृषभारूढ़ाय नमः, ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः,
ॐ अनेकात्मने नमः, ॐ सामप्रियाय नमः, ॐ सात्विकाय नमः, ॐ स्वरममाय नमः,
ॐ शुद्धविग्रहाय नमः, ॐ त्रिमूर्त्तये नमः, ॐ शाश्वताय नमः, ॐ अवनीश्वराय नमः,
ॐ खण्डपरशवे नमः, ॐ सर्वज्ञाय नमः, ॐ अजाय नमः, ॐ परमात्मने नमः,
ॐ पाशविमोचकाय नमः, ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः, ॐ कृतिवाससेनमः, ॐ हविषे नमः,
ॐ पुरारातये नमः, ॐ यज्ञमयाय नमः, ॐ भगवते नमः, ॐ पञ्चवक्त्राय नमः,
ॐ प्रमथाधिपाय नमः, ॐ सदाशिवाय नमः, ॐ मृत्युञ्जयाय नमः, ॐ विश्वेश्वराय नमः,
ॐ सूक्ष्मतनवे नमः, ॐ वीरभद्राय नमः, ॐ जगद्व्यापिने नमः, ॐ गणनाथाय नमः,
ॐ जगदगुरुवे नमः, ॐ प्रजापतये नमः, ॐ व्योमकेशाय नमः, ॐ हिरण्यरेतसे नमः,
ॐ महासेनाय नमः, ॐ दुर्धर्षाय नमः, ॐ जनकाय नमः, ॐ गिरीशाय नमः,
ॐ चारुविक्रमाय नमः, ॐ गिरिशयाय नमः, ॐ रुद्राय नमः, ॐ अनघाय नमः,
ॐ भूतपतये नमः, ॐ भुजंगभूषणाय नमः, ॐ स्थाणवे नमः, ॐ भर्ग्गाय नमः,
ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः, ॐ गिरिधन्वने नमः, ॐ दिगम्बराय नमः, ॐ गिरिप्रियाय नमः,
ॐ मृडाय नमः, ॐ अष्टमूर्त्तये नमः, ॐ पशुपतये नमः, ॐ देवाय नमः, ॐ अव्यक्ताय नमः,
ॐ महादेवाय नमः, ॐ अनन्ताय नमः, ॐ अव्ययायनमः, ॐ दक्षाध्वरहराय नमः,
ॐ हरये नमः, ॐ सहस्राक्षाय नमः, ॐ पुष्पदन्तभिदे नमः, ॐ तारकाय नमः,
ॐ भगनेत्रभिदे नमः, ॐ हराय नमः, ॐ अपवर्गप्रदाय नमः, ॐ सहस्रपदे नमः,
ॐ अव्यग्राय नमः, ॐ श्रीपरमेश्वराय नमः

शिवरात्रि विशेष

शिवपुराण में महाशिवरात्रि का महत्त्व बताते हुए कहा गया है कि जो व्यक्ति इस दिन सच्चे मन से शिव की आराधना और मंत्रो का जाप करता है उसे वर्ष भर किए उपवासों से कई गुणा पुण्य की प्राप्ति होती है। शिव मंत्रों के उच्चारण से तरंगित होने वाली ऊर्जा से हमें सकारात्मक ऊर्जा मिलती है। भोलेनाथ मंत्र जप से बहुत जल्दी प्रसन्न होते हैं और आपके सभी दुख, सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं। साथ ही आप पर महाकाल की असीम कृपा बरसने लगती है।

सर्वप्रथम गुरु पूजन करना चाहिए।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥
अखण्ड मण्डलाकांर व्याप्तं येन चराचश्म्।
तत् पदम् दर्शितम् येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥
तत्पश्चात श्री गणेश वन्दना, श्री गंगा जी की आरती, श्री शंकर भगवान की आरती और क्षमा प्रार्थना करनी चाहिए।
शिव मन्दिर में प्रवेश से पहले द्वार पर कीर्तिमुख नामक शिवगण की पूजा अवश्य करनी चाहिए।
मंत्र इस प्रकार है- ॥ॐ कीर्ति मुखाय नमः॥

माता पार्वती का पूजन-

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायाणि नमोऽस्तुते॥

शिव मन्दिर में रात्रि के चारों प्रहर का पूजन करना चाहिए।

रात्रि के चारों प्रहर में पूजन के शिव मंत्र इस प्रकार हैं-

प्रथम प्रहर	-	श्री शिवाय नमः
द्वितीय प्रहर	-	श्री शंकराय नमः
तृतीय प्रहर	-	श्री महेशाय नमः
चतुर्थ प्रहर	-	श्री रुद्राय नमः

-आचार्य सतीश भारद्वाज
धर्म संघ, दिल्ली
निवास- यमुना विहार, दिल्ली

रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाण रूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम्।।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशम्।
करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।।

तुषाराद्रिशंकाशगौरं गम्भीरं, मनोभूत कोटिप्रभाश्रीशरीरम्।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा, लसद्भालभालेन्दु कण्ठे भुजंगा।।

चलत्कुण्डलं भ्रूसुनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।

प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयः शूल निर्मूलनम् शूलपाणिं, भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्।।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी, सदासच्चिदानन्ददाता पुरारी।
चिदानन्द संदोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।

न यावद् उमानाथ पादारविंदं, भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति संतापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूतादिवासम्।।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां, नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम्।
जराजन्म दुःखौद्य तातप्यमानम्, प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो।।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।

शिव पंचाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय।। 1
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय, नन्दीश्वरप्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय।। 2
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय।। 3
वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य मुनीन्द्र देवार्चित शेखराय।
चन्द्रार्ककर्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय।। 4
यक्ष स्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय।। 5
पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग

सौराष्ट्रे सोमनाथञ्चश्रीशैले मल्लिकार्जुनम।
उज्जयिन्यामहाकालमों कारममलेश्वरम्।।
केदार हिमवत्पृष्ठे डाकिन्यां भीम शंकरम्।
वाराणस्यां च विश्वेशं त्र्यम्बकम् गौतमी तटे।।
वैद्यनाथं चिताभूमौ नागेशं दारुका बने।
सेतु बन्धे च रामेशं घुश्मेशं च शिवालये।।
द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
सर्वपाप विनिर्मुक्तः सर्वसिद्ध फलं लभेत्।।

महामृत्युंजय जप विधि

संकल्प - ॐ विष्णुः! अद्येहेत्यादि पूर्वोच्चारित एवं ग्रह गुण-विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ मम आत्मनः श्रुति स्मृति पुराणोक्ति फल प्राप्त्यर्थं यजमानस्य (वा) मम शरीरे अमुक पीड़ा निवृत्ति द्वारा सद्यः आरोग्य प्राप्त्यर्थं श्री महामृत्युंजय देवता प्रीत्यर्थ श्री महामृत्युंजय मंत्र जपं अहं करिष्ये।

विनियोग - ॐ अस्य श्री महामृत्युंजयमंत्रस्य वशिष्ठः ऋषिः, श्री महामृत्युंजयरुद्रो देवता, अनुष्टुप छन्दः हौं वीजम् जूँ शक्तिः सः कीलकम् श्री महामृत्युंजय प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

न्यासा - वशिष्ठ ऋषये नमः शिरषि। अनुष्टुप छन्दसे नमः मुखे। श्री महामृत्युंजय रुद्र देवतायै नमः हृदये। हाँ बीजाय नमः गुह्मे जूँ शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वांगेषु।

ॐ त्र्यम्बकं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ यजामहे तर्जनीभ्यां नमः, ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं मध्यामाभ्यां नमः। ॐ उर्वारुकमिव बन्धनात् अनामिकाभ्यां नमः, ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ मामृतात् करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि।

ध्यानम् - चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूष पात्रं महद् हस्ताब्जेन्दधत् सुदिव्य ममलंहास्यास्य पंकेरुहम्। सूर्येन्द्वग्नि विलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्रांकुशान् भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युंजयं संस्मरेत्।

मंत्रोद्वार - ॐ हौं जूँ सः ॐ भूर्भूवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिंम्पुष्टि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मा मृतात्। ॐ सः जूँ हौं स्वः भुवः भूः ॐ।

उत्तरन्यासं कृत्वा - गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वरः।।1।।
मृत्युंजय महारुद्र त्राहि माम शरणागतम्।
जन्म मृत्यु जरारोगैः पीड़ितं कर्म बन्धनैः।।2।।

अर्पण : - अनेन महामृत्युंजय जपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युंजय रुद्र-देवताः प्रीयतां न मम्।

शिवाष्टकम्

जय शिव शंकर, जय गंगाधर, करूणाकर करतार हरे।
जय कैलाशी, जय अविनाशी, सुखराशि सुखसार हरे।
जय शशि-शेखर, जय डमरू-धर जय जय प्रेमागार हरे।
जय त्रिपुरारी, जय मदहारी, अमित, अनन्त, अपार हरे।
निर्गुण जय जय, सगुण अनामय, निराकार साकार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥1॥

जय रामेश्वर, जय नागेश्वर, वैद्यनाथ केदार हरे।
मल्लिकार्जुन, सोमनाथ, जय, महाकाल ओंकार हरे।
त्र्यम्बकेश्वर, जय घुश्मेश्वर, भीमेश्वर, जगतार हरे।
काशी-पति श्रीविश्वनाथ जय, मंगलमय, अघहार हरे।
नीलकण्ठ जय, भूतनाथ जय, मृत्युञ्जय अविकार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे। ॥2॥

जय महेश, जय जय भवेश, जय आदि देव, महादेव विभो।
किस मुख से हे गुणातीत प्रभु! तव अपार गुण वर्णन हो।
जय भवकारक तारक, हारक, पातक-दारक शिव शम्भो।
दीन दुःख हर, सर्व सुखाकर, प्रेम सुधाधर दया करो,
पार लगा दो भवसागर से, बन कर कर्णाधार हरे।
पारवती पति हर-हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥3॥

जय मन भावन, जय अति पावन, शोक नशावन शिवशम्भो
विपद विदारन, अधम उबारन, सत्य सनातन शिव शम्भो।
सहज वचनहर जलज नयनवर, धवल-वरन-तन शिव शम्भो।
मदन-कदन-कर, पाप- हरन-हर, चरन-नमन-धन शिव शम्भो।
विवसन, विश्वरूप, प्रलयंकर, जग के मूलाधार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥4॥
भोलानाथ कृपालु दयामय, ओढरदानी शिवयोगी।

सरल हृदय, अतिकरूण सागर, अकथ-कहानी शिवयोगी।
निमिष मात्र में देते हैं, नव निधि मनमानी शिवयोगी।
भक्तों पर सर्वस्व लुटाकर, बने मसानी शिवयोगी।
स्वयं अकिंचन, जनमनरंजन, पर शिव, परम उदार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि-पाहि दातार हरे ॥5॥

आशुतोष! इस मोह-मयी निद्रा से मुझे जगा देना,
विषम-वेदना से विषयों की मायाधीश छुड़ा देना,
आप सुधा की एक बूंद से जीवन मुक्त बना देना,
दिव्य-ज्ञान-भण्डार-युगल-चरणों की लगन लगा देना,
एक बार इस मन मन्दिर में कीजे पद-संचार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥6॥

दानी हो, दो भिक्षा में अपनी अनपायनि भक्ति प्रभो,
शक्तिमान हो, दो अविचल निष्काम प्रेम की शक्ति प्रभो,
त्यागी हो, दो इस असार संसार से पूर्ण विरक्ति प्रभो,
परमपिता हो, दो तुम अपने चरणों में अनुरक्ति प्रभो,
स्वामी जो निज सेवक की सुन लेना करुण पुकार हरे
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥7॥

तुम बिन 'बेकल' हूं प्राणेश्वर, आ जाओ भगवन्त हरे,
चरण शरण की बाँह गहे हे, उमारमण प्रियकान्त हरे,
विरह व्यथित हूँ; दीन दुःखी हूँ; दीन दयालु अनन्त हरे,
आओ तुम मेरे हो जाओ, आ जाओ श्रीमन्त हरे,
मेरी इस दयनीय दशा पर कुछ तो करो विचार हरे।
पार्वती पति हर-हर शम्भो, पाहि पाहि दातार हरे ॥8॥

॥ इति शिवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

भगवान कैलासवासी

शीश गंग अर्धंग पार्वती सदा विराजत कैलासी।
नंदी भृंगी नृत्य करत हैं, धरत ध्यान सुर सुखरासी॥
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बह बैठे हैं शिव अविनाशी।
करत गान गन्धर्व सप्त स्वर राग रागिनी मधुरासी॥
यक्ष-रक्ष-भैरव जहँ डोलत, बोलत हैं वनके वासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर भ्रमर करत हैं गुञ्जासी॥
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु, लाग रहे हैं लक्षासी।
कामधेनु कोटिक जहाँ डोलत, करत फिरत हैं भिक्षासी॥
सूर्यकान्त सम पर्वत सोहे, चन्द्रकान्त भव के वासी।
छहों ऋतु नित फलत रहत हैं, पुष्प चढ़त हैं वर्षासी॥
देवमुनि जन की भीड़ पड़त है, निगम रहत जो गित गासी।
ब्रह्मा विष्णु जाको ध्यान धरत हैं, कछु शिव हमको फरमासी॥
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर, सदा आनन्दितं सुख रासी।
जिनको सुमिरन सेवा करता, छूट जाय यम की फाँसी॥
त्रिशूल धरजी को ध्यान निरन्तर, मन लगायकर जो गासी।
दूर करो विपदा शिव तनकी, जन्म-जन्म शिव पद पासी॥
कैलासी काशी के वासी बाबा, अविनाशी मेरी सुध लीजो॥
सेवक जान सदा चरणन को, अपनो जान कृपा कीजो॥
आप तो प्रभु जी सदा सयाने बाबा, अवगुण मेरी सब ढकियो।
सब अपराध क्षमाकर शंकर किंकर की विनती सुनियो॥
अभयदान दीजो प्रभु मोको, सकल सृष्टि के हितकारी।
भोलेनाथ बाबा भक्त निरन्जन, भव भन्जन भव शुभकारी॥
काल हरो हर कष्ट हरो हर, दु:ख हरो दारिद्रय हरो।
नमामि शंकर भजामि भोले बाबा, हर-हर शंकर तव शरणम्॥

ॐ लिंगाष्टकम्

शिवलिंग दर्शन
पुरा महादेव

श्री पुरशुरामेश्वर
महादेव मंदिर,
पुरा (बागपत),
उत्तर प्रदेश

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिंगम्, निर्मलभाषितशोभितलिंगम्।
जन्मजदु:खविनाशकलिंगम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।। 1

देवमुनिप्रवरार्चितलिंगम्, कामदहं करुणाकर लिंगम्।
रावणदर्प विनाशन लिंगम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।। 2

सर्वसुगन्धिसुलेपित लिंगम्, बुद्धिविवर्धनकारण लिंगम्।
सिद्धसुरासुर वन्दित लिंगम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।। 3

कनकमहामणिभूषित लिंगम्, फणिपति वेष्टित शोभित लिंगम्।
दक्षसुयज्ञ विनाशन लिंगम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।। 4

कुंकुमचन्दन लेपित लिंगम्, पंकजहारसुशोभित लिंगम्।
संच्चितपाप विनाशन लिंगम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।। 5

देवगणार्चित सेवितलिंगम्, भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगम्।
दिनकरकोटिप्रभाकर लिंगम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।। 6

अष्टदलोपरिवेष्टित लिंगम्, सर्व समुदभव कारण लिंगम्।
अष्ट दरिद्रविनाशित लिंगम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।। 7

सुरगुरुसुरवर पूजित लिंगम्, सुरवनपुष्पसदार्चित लिंगम्।
परात्परं परमात्मक लिंगम्, तत् प्रणमामि सदाशिव लिंगम्।। 8

लिंगाष्टकमिद पुण्यं य: पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

।। इति लिंगाष्टकम् स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।।

श्री शिव चालीसा

।।दोहा।।

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान।।

जय गिरिजा पति दीन दयाला। सदा करत सन्तन प्रतिपाला।।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके। कानन कुण्डल नागफनी के।।
अंग गौर शिर गंग बहाये। मुण्डमाल तन छार लगाये।।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे। छवि को देख नाग मुनि मोहे।।
मैना मातु की है दुलारी। बाम अंग सोहत छवि न्यारी।।
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी। करत सदा शत्रुन क्षयकारी।।
नन्दि गणेश सोहे तहँ कैसे। सागर मध्य कमल हैं जैसे।।
कार्तिक, श्याम और गणराऊ। या छवि को कहि जात न काऊ।।
देवन जबहीं जाय पुकारा। तबहीं दुख प्रभु आप निवारा।।
किया उपद्रव तारक भारी। देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी।।
तुरंत षडानन आप पठायउ। लव निमेष महँ मारि गिरायउ।।
आप जलंधर असुर संहारा। सुयश तुम्हार विदित संसारा।।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई। सबहिं कृपा कर लीन बचाई।।
किया तपहिं भागीरथ भारी। पूरब प्रतिज्ञा तसु पुरारी।।
दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं। सेवक स्तुति करत सदाहीं।।
वेद नाम महिमा तव गाई। अकथ अनादि भेद नहिं पाई।।
प्रकट उदधि मंथन में ज्वाला। जरे सुरासुर भये विहाला।।

कीन्ह दया तहँ करी सहाई। नीलकण्ठ तब नाम कहाई॥
पूजन रामचंद्र जब कीन्हा। जीत के लंक विभीषण दीन्हा॥
सहस कमल में हो रहे धारी। लीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी॥
एक कमल प्रभु राखेउ जोई। कमल नयन पूजन चहँ सोई॥
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर। भये प्रसन्न दिए इच्छित वर॥
जय जय जय अनंत अविनाशी। करहु कृपा घट-घट के वासी॥
दुष्ट सकल नित मोहि सतावै। भ्रमत रहे मोहि चैन न आवै॥
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो। यहि अवसर मोहि आन उबारो॥
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो। संकट से मोहि आन उबारो॥
मात-पिता भ्राता सब कोई। संकट में पूछत नहिं कोई॥
स्वामी एक है आस तुम्हारी। आय हरहु अब संकट भारी॥
धन निर्धन को देत सदाहीं। जो कोई जांचे वो फल पाहीं॥
अस्तुति केहि विधि करौं तुम्हारी। क्षमहु नाथ अब चूक हमारी॥
शंकर हो संकट के नाशन। मंगल कारण विघ्न विनाशन॥
योगी यति मुनि ध्यान लगावैं। नारद शारद शीश नवावैं॥
नमो नमो जय नमः शिवाय। सुर ब्रह्मादिक पार न पाय॥
जो यह पाठ करे मन लाई। ता पार होत है शम्भु सहाई॥
ऋनिया जो कोई हो अधिकारी। पाठ करे सो पावन हारी॥
पुत्र हीन कर इच्छा कोई। निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई॥
पण्डित त्रयोदशी को लावे। ध्यान पूर्वक होम करावे॥
त्रयोदशी व्रत करे हमेशा। तन नहीं ताके रहे कलेशा॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे। शंकर सम्मुख पाठ सुनावे॥
जन्म जन्म के पाप नसावे। अन्तवास शिवपुर में पावे॥
सब दुखियों को आस तुम्हारी। जानि सकल दुख हरहु हमारी॥

॥ दोहा ॥

नित्त नेम कर प्रातः ही, पाठ करूँ चालीस।
तुम मेरी मनोकामना, पूर्ण करो जगदीश॥
मंगसर छठि हेमन्त ऋतु, संवत चौसठ आन।
अस्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्याण॥

आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।
एकदन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।

अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया॥
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।

पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।

दीनन की लाज राखो शम्भु-सुत वारी।
कामना को पूरा करो जग बलिहारी॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।

आरती श्री गंगा जी की

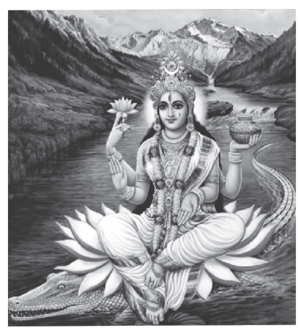

ओ३म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता॥
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता॥ ओ३म् जय....
पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हरी, त्रिभुवन सुख दाता॥ ओ३म् जय....
एक बार जो प्राणी, शरण तेरि आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगती पाता॥ ओ३म् जय....
आरति मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता।
पाप मुक्त होकर वह, मोक्ष धाम पाता॥ ओ३म् जय....

श्री गंगा वन्दना
पापापहारी दुरितारि तरंगधारि।
शैल-प्रचारि गिरिराज गुहाविदारि॥
झंकारकारि हरिपाद रजोऽपहारि।
गंगा पुनातु सततं शुभकारि वारि॥

आरती श्री शिवजी की

ऊँ जय शिव ओंकारा, हरि शिव ओंकारा
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव अर्द्धांगी धारा॥ ॐ जय...
एकानन चतुरानन, पंचानन राजे,
हंसानन, गरुड़ासन, वृषवाहन साजे॥ ॐ जय...
दो भुज चार चतुर्भुज, दस भुज ते सोहे,
तीनों रुप निरखता, त्रिभुवन जन मोहे॥ ॐ जय...
श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघाम्बर अंगे,
सनकादिक ब्रह्मादिक, भूतादिक संगे॥ ॐ जय...
अक्षमाला, बनमाला, मुण्डमाला धारी,
चन्दन, मृगमद, चन्दा भाले शुभकारी॥ ॐ जय...
कर मध्ये च कमण्डल, चक्र त्रिशुल धर्ता,
जग करता, जग हरता, जग पालन कार्ता॥ ॐ जय...
चौंसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरो,
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू॥ ॐ जय...
लक्ष्मी वर सावित्री श्री पार्वती संगे,
अर्द्धांगी गायत्री सिर सोहे गंगे॥ ॐ जय...
काशी में विश्वनाथ विराजे, नन्दो ब्रह्मचारी,
नित उठ भोग लगावें महिमा अति भारी॥ ॐ जय...
ब्रह्म विष्णु सदाशिव जानत अविवेका,
प्रणवाक्षर के मध्य ये तीनों एका॥ ॐ जय...
त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावै,
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावै॥ ॐ जय...

श्री भगवान परशुराम चालीसा

॥ ओ३म शंकराचार्य नमः॥

कृष्णा नन्द मुकन्द बिहारी, बावन माधव मकसूधरनम्।
काली मरदन कंस निकन्दं, देवकी नन्दन तुम शरणम्
चक्र प्राणवारह महिषवर, जल शय्या मंगल करणम्
ऐत नाम भजो रे नितवासर, जल शय्या मंगल करणम्

हर हरि, हरिश्चन्द्र हनुमन्तं हलायुधाम् पंचक वै स्मशेन्नित्यं घोर संकट नाशनम्
ओ३म् जमदग्नाथ विदमहे महावीराय धीमहि तन्नो परशुरामः प्रचोदयात्
(नित्य इन पुण्य श्लोक और परशुराम गायत्री पढने से अघोर संकट
का विनाश एंव मनोकामना पूर्ण होती है।)

वन्द हूं भृगु कुल कमल पतंगा, सदा रहत निज, मन के संगा।
दया सिन्धु करूणा कर स्वामी, तुम घट-घट के अन्तरयामी।
ऋषि जमदग्नी पिता तुम्हारे, हो मातु रेणुका के तुम प्यारे।
शीष जटा मुख तेज बिराजे, अक तिपुण्ड मस्तक पर राजे॥
रूद्र माल गल सुन्दर सोहे, वक्ष विशाल वीर मन मोहे।
ब्रह्म-सूत्र कांधे पर राजे, कटि मृग छाल मेखला राजे॥
तेज पूँज पीताम्बर धारी, भक्त जनन के संकट हारी।
एक हाथ में परशु विराजे, दूजे वेद संहिता साजे।
प्रबल पीठ पर शर धनु साहे, प्रलयडेंकर शंकर मन मोहे।
शास्त्र शस्त्र अधिकार समाना, हो समर्थ तुम कृपा निधाना।
दम्भ दलन सज्जन सुख दाता, भू मण्डल के भाग्य विधाता।
चारो वेद के तुम ज्ञाता, चार पदारथ के तुम ज्ञाता।
चारों युग प्रताप समाना। अमर अजर तुम है भगवाना।
कार्यवीर्य अर्जुन हंकारी, भा विषी काम गई मतिमारी।
तपो निष्ठ जमदग्नी ज्ञानी, तिनसे की उसने मनमानी।
हारा रण निज सैन्य नसाई, काम धेनू तब लई चुराई।

महर्षि बैठे ध्यान लगाई, खल पुत्रों ने तेग चलाई।
ऐसे धर्म विरोधी मारे, सुर मुनि जन प्रभु उद्धारे।
त्रेता युग में है भगवाना, शिव धुन भंग हुआ तुम जाना।
छोड़ तपस्या दौडे आय, गुरू धनु भजक मारक आये।
राम कहा धनु भंजन हारा, दशरथ सुतमैं दास तुम्हारा।
परम पुरूष अवतारी चीन्हा, वैष्णव धुनष राम कह दीन्हा।
ब्रह्म सेज गहि जोडे हाथा, तन आशीष जीते रघुनाथा।
चिरंजीव द्वापर में आके, योग्य शिष्य द्रोणादिक पाके।
राम तुम्हीने शिक्षा दीन्ही, भीष्म कर्ण सब ही न लीन्ही।
वेद पाठ कर मुनि जन सापा, कीन्ही तिलक युद्धिष्ठर माथा।
कश्यप ऋषि की आज्ञा पाके, गिरी महेन्द्र के ऊपर जाके।
कलियुग में सिंहासन पाके, बैठे प्रभु का ध्यान लगा के।
इक्कीस बार मार भुवि तारा, जन द्रोही क्षत्रीय सहारा।
दशरथ जनक समान उबारे, सजनन के नही बेर तुम्हारे।
चारों जनक समान उबारे, सजनन के नही बेर तुम्हारे।
बालक युवा वृद्ध अरू नारी, जो कोई आवे शरण तुम्हारी।
लेते लाभ जीवन सुख राजि, देते तुम कल्पाब्ल निवासी।
कर पितृ मात प्रसन्न गुसाई, अष्ट सिद्धि पाया तुम साई।
ऋषि जन की तुम रक्षा कीन्ही, सबने मिलकर आयसु दीन्ही।
परशुराम प्रभु को जो ध्यावे, ऋद्धि सिद्धि कुल वृद्धि पावे।
जो यह चालीसा नित गावे, तेहि घर सकल सम्पदा आवे।
बार-बार भक्त यह भाखे, निजजन की प्रभु लज्जा राखे।
जो यह बिरदावली सुनावे, तुमरी कृपा सदा सुख पावे।

संकलनकर्त्ता:
वी॰ के॰ अग्रवाल
होटल सिटी पार्क, पीतम पुरा, दिल्ली

मन्दिर विकास निमित सहयोग और धन्यवाद

आदरणीय शिवभक्तों का सहयोग और धन्यवाद

हम सभी शिवभक्तों का हृदय से आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने तन, मन और धन से किसी न किसी रूप में मन्दिर की व्यवस्था तथा प्रगति में सहयोग दिया। हम समिति की ओर से प्रशासनिक अधिकारियों का, जिन्होने विभिन्न विभागों से सम्बन्धित होते हुए श्रावण व फाल्गुन मास के मेले में, एक परिवार की भांति कार्य कर इन आयोजनों को सफल बनाया है धन्यवाद करते हैं। आप सभी अधिकारी व कर्मचारी जो अन्य क्षेत्रों से आते हैं बधाई के पात्र हैं। भगवान परशुरामेश्वर महादेव के चरणारविन्दों में यही प्रार्थना है कि आपका जीवन सन्मार्गीय तथा मंगलमय हो।

हम समिति की ओर से, स्व॰ लाला जगदीश प्रसाद मित्तल, विवेक विहार, दिल्ली, जिन्होंने मन्दिर के जीर्णोद्धार व शंकराचार्य सत्संग भवन के सौंदर्यकरण में सहयोग दिया। श्री ब्रिज मोहन गुप्ता, क्राकरी वालों, ने लगभग 1,30,000 रुपये व्यय करके मन्दिर प्रांगण में हाल निर्माण कार्य कराया। श्री किशन चन्द्र अग्रवाल, फरीदाबाद वालों, की प्रेरणा से लाला वी॰ के॰ अग्रवाल, निवासी दिल्ली, ने श्रवण द्वार (पश्चिमी द्वार) का सौन्दर्यकरण कार्य कराया, मन्दिर प्रांगण में टाईल्स लगवाई व अन्य कई काम शुरू कराये हुये है। शंकराचार्य द्वार (पूर्वी द्वार) के निर्माण में, स्व॰ श्री आत्माराम गुप्ता, अध्यक्ष प्रधान कांवड संघ त्रिनगर दिल्ली; श्री तिलकराज गुप्ता, श्री सुशील कुमार गुप्ता (उम्मेदगढ़ वाले) द्वारा विशेष आर्थिक सहयोग दिया गया। श्री वेदप्रकाश पांचाल, राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय विश्वकर्मा पांचाल महासभा, कालू राम जी, जिन्होंने विश्वकर्मा मन्दिर व गंगोत्री द्वार की ओर हाल निर्माण कार्य पूर्ण किया व परशुरामेश्वर महादेव के श्री चरणों मे शिव भक्तों की सेवा हेतु मुख्य संरक्षक श्रीमद्‌जगदगुरु शंकराचार्य जी के सान्निध्य में समर्पित किया। श्री सत्य नारायण जी, मोतीलाल गुप्ता सोनीपत (हरियाणा वालों) के सहयोग से कन्या पाठशाला की ओर सभी सुविधाओं से युक्त एक वृहद हाल का निर्माण कार्य पूर्ण कराया गया है। अर्किटैक्ट श्री राजीव सूद ने भी मन्दिर की निर्माण सम्बन्धित योजनाओं के लागू करने में अपना बहुमूल्य सहयोग प्रदान किया है। श्री सतीश मित्तल (गांव बसौदी, हरियाणा) ने श्रवण द्वार व शंकराचार्य द्वार के लोहे के गेटों के माध्यम से सहयोग किया है। श्री अजेश चौधरी तितरौदा वालो ने भी मन्दिर निर्माण कार्य में समय-समय पर अपना सहयोग प्रदान किया है। स्व॰ श्री कृष्णदत्त शर्मा, इंजीनीयर डी.डी.ए. (दिल्ली) की प्रेरणा व सहयोग से श्री स्वामी कृष्ण बोध द्वार (दक्षिण द्वार) का निमार्ण कार्य प्रारम्भ हुआ है। उन्होंने इस निर्माण कार्य में लगभग 4 लाख रुपये का सहयोग प्रदान किया है। श्री अनरूप शर्मा व श्री अरूण शर्मा, अर्वाचीन स्कूल, दिल्ली वालों ने सोलर प्लांट (6 KV) लगवाया जिससे कि मन्दिर प्रांगण में रात्रि में विद्युत प्रकाश सुचारू रूप से रहे। श्री सुरेश कुमार गुप्ता (गन्नौर मन्डी, हरियाण वाले) एवं पूर्व दरोगा श्री रुकम सिंह जी ने सैन समाज की ओर से शंकराचार्य द्वार के पास धर्मशाला निर्माण में तन-मन-धन से सहयोग किया।

पूर्व सचिव श्री चन्द्र कुमार शर्मा (सी॰के॰ शर्मा) ने परशुरामेश्वर मन्दिर गर्भगृह में भगवान गणेश जी, कार्तिकेय जी, कुबेर जी, माता पार्वती एवं नन्दीश्वर महाराज के विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा व पूजन करवाकर भगवान परशुरामेश्वर महादेव को अर्पित किया। स्वयं जगद्‌गुरु शंकराचार्य, ब्रह्मलीन माधवाश्रम जी महाराज ने प्रवास कर सभी विग्रहों की प्राण प्रतिष्ठा की। जमदग्नि परिवार के पं॰ दयानन्द जी, राजेन्द्र जी, साहब सिंह जी, जयप्रकाश जी, महावीर जी, धर्मवीर जी व धर्मपाल जी निवासी ग्राम ईसापुर नई दिल्ली वालों ने अपनों पूर्वजों स्वर्गीय श्रीमति कस्तूरी देवी, स्व॰ पं॰ नन्द लाल एवं स्व॰ पं॰ शिवदत्त की स्मृति में यज्ञशाला का निर्माण करवाकर भगवान परशुरामेश्वर महादेव को अर्पित किया। सतपाल शर्मा, पीतमपुरा दिल्ली वालों, ने स्थाई ध्वज का निर्माण कराया। श्री वेद प्रकाश शर्मा, केवल पार्क दिल्ली वालों, ने एक कमरे का निर्माण कराकर सहयोग दिया। पं॰ जयभगवान शर्मा व सत्यनारायाण जी के प्रबन्धक काल में पुरामहादेव कन्या पाठशाला के प्रांगण में तीर्थ यात्रियों के ठहरने के लिए सुविधा की जाती है।

बड़े गर्व का विषय है कि नागपुर महाराष्ट्र से इतनी दूर आकर श्री महेन्द्र बत्रा C/O ईश्वर ट्रेक्टर वालो ने गेस्ट हाऊस के यात्री शैड बनवाने में सहयोग प्रदान किया। संरक्षक मन्दिर समिति श्री विनय कुराली शान्ति इन्जीनियरिंग कॉलेज कुराली, मेरठ वालों ने दक्षिण द्वार के साथ विशाल हालों का निर्माण कार्य कराकर मन्दिर समिति का भरपूर सहयोग किया है। श्री अनिल शर्मा टीला शहजादपुर, गाजियाबाद वालों ने भी निर्माण कार्यो में विशेष सहयोग दिया है। वर्तमान में, मन्दिर परिसर का विस्तार करने के लिए, श्री तिलकराम गुप्ता जी (उम्मेदगढ़) ने, श्रवण द्वार के दाहिनी ओर, (उत्तरी दिशा में) मन्दिर से सटा हुआ विशाल भूखण्ड खरीदकर, मन्दिर को समर्पित किया। इस भूखण्ड पर श्री सुनील (रोहटा), निवासी रोहटा जिला मेरठ द्वारा विशाल भवन निर्माण का कार्य कराया जा रहा है, जो प्रगति पर है।

हम स्व॰ श्री श्यामसुन्दर शर्मा राष्ट्रपति पदक प्राप्त के भी विशेष रूप से आभारी हैं, जिन्होने समय-समय पर अपना सहयोग व मार्ग निर्देशन दिया है। हम पूर्व समिति के मुख्य पदाधिकारी श्री तिलक राज गुप्ता, अध्यक्ष श्री टी॰पी॰ शर्मा, सचिव श्री प्रमोद कुमार गुप्ता पूर्व चेयरमेन, अग्रवाल मण्डी, कोषाध्यक्ष व अन्य सभी सदस्यों का भी हृदय से आभार प्रकट करते है, जिन्होंने अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर अपने बहुमूल्य सुझावों के द्वारा समय-समय पर हमारा मार्ग दर्शन किया है।

मन्दिर समिति द्वारा विकास कार्य एवम् आगामी परियोजनाएँ

नवनिर्वाचित परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर समिति, मन्दिर के विकास एवम् विस्तार कार्यो में निरंतर गतिशील तथा प्रगतिशील है। साथ ही साथ पूर्व समिति द्वारा शुरू कराये गये कार्यो को वर्तमान समिति पूरा कराने का प्रयास कर रही है। मन्दिर समिति मेला आयोजन व्यवस्था के अतिरिक्त जन कल्याण के कार्य भी करती है। इसी कड़ी में मन्दिर को जोड़ने वाली सड़कों पर इंडिया मार्का नलके लगवाये गये। सुलभ शौचालयों की

मरम्मत का कार्य कराया गया। जिससे कि तीर्थ यात्री जो कांवड़ लेकर आते हैं व अन्य को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो। मन्दिर समिति ने शासन के सहयोग से एक बड़ी योजना को मूर्तरूप दिया है। जिस पर लगभग एक करोड़ पैसंठ लाख रुपये व्यय हुआ। जिसमें नदी पर घंटाघर, पक्की बेरीकेटिंग व्यवस्था व इसके अतिरिक्त लगभग 65 लाख रुपये की लागत से अतिथि ग्रह का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। मन्दिर के अन्दर बह्मलीन जगदगुरु शंकराचार्य अनन्त श्री विभूषित स्वामी श्री कृष्ण बोधाश्रम जी महाराज ज्योतिष्पीठाधीश्वर (बद्रीकाश्रम) हिमालय (जिनकी प्रेरणा से मन्दिर व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए पुरा महादेव सेवा संघ का गठन करके संस्था का पंजीकरण कराया गया था) की प्रतिमा को भव्य रूप प्रदान कर उसे सत्संग भवन में पदास्थापित किया गया है। इसके साथ-साथ मन्दिर क्षेत्र को जोड़ने वाली सभी ग्रामीण सड़को व मन्दिर परिसर की सड़को को आर सी॰सी॰ की बनाने व क्षेत्र के सौन्दर्यकरण का कार्य हो चुका है; पीने के पानी की टंकी का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो चुका है व हिडंन नदी पर पक्के घाट का प्रस्ताव प्रशासन के पास भेजा जा चुका है जिसकी वजह से यह क्षेत्र दर्शनीय व पर्यटक स्थल के रूप में विकसित हो, साथ ही साथ क्षेत्रीय जनता को अधिक तीर्थ यात्रियों के आने से आर्थिक लाभ भी होगा।

मन्दिर के श्रवण द्वार का जीर्णोधार एवम् पुनः निर्माण (स्वास्तिक की भुजाकृति के रूप में) कार्य वर्तमान समिति के पदाधिकारियों की देख-रेख में किया जा रहा है। मन्दिर समिति के अधिकारियों एवम् सदस्यों के सतत प्रयासों एवम् संबंधित प्रशासनिक विभागों से पत्रचार के फलस्वरूप परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर समिति को भव्य तीर्थस्थल के रूप में विकसित करने की भावी परियोजना को क्रियान्वित करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। इसके लिए मन्दिर परिसर का औपचारिक निरक्षण भी प्रशासन द्वारा कराया जा चुका है। मन्दिर समिति के प्रयासों एवम् प्रेरणा से व्यक्तिगत एवम् अनेकों संस्थानों का सहयोग विकास कार्यो के लिए मिलता रहता है। इसी कड़ी में 'रोटरी क्लब' द्वारा मन्दिर में, जलहरी तथा वर्षा जल संचयन के लिए 'जल शोधन' संयंत्र की स्थापना की जा रही है।

भगवान महादेव के श्री चरणों में प्रार्थना है कि सभी भक्तों का मंगल हो और उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण हों तथा इस भव्य आलौकिक मन्दिर का इसी प्रकार विस्तार होता रहे।

अरूण शर्मा (अध्यक्ष)
अर्वाचीन इंटरनैशनल स्कूल, दिल्ली

सुरेन्द्र यादव, अधिवक्ता (सचिव)
बुढ़सैनी (बागपत)